



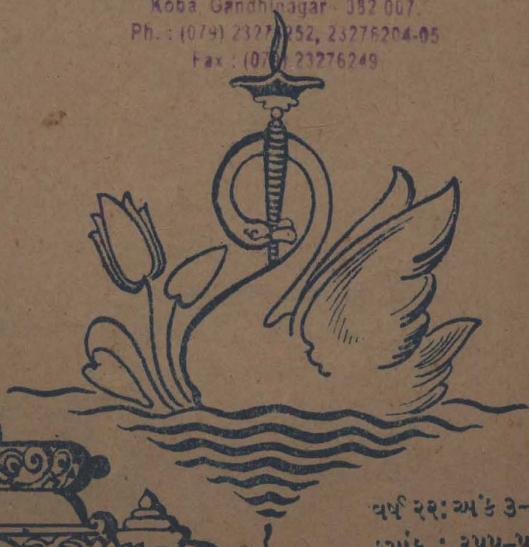
શ્રી મહાવિર જાનરાધન કોબા

JAYA SRI KAILASSAGARSURI GHYANMANDIR
SHREE MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA

Koba, Gandhinagar - 382 007.

Ph. : (079) 23275252, 23275204-05

Fax : (079) 23276249



નાયું રદ્દ : અંક 3-4

કેમાંક : ૨૫૫-૫૬

विषय-दर्शन

अंकः	लेखः	लेखकः	पृष्ठः
१.	ज्ञानी शिक्षा (वार्ता)	श्री. रतिलाल दीपचंद हेसाई	४८
२.	भनारस	श्री. मोहनलाल दीपचंद चोकसी	५३
३.	काव्यशास्त्री यशोविज्ञयगणि	प्रौ. हीरालाल २. कापडिया एम. ए.	५५
४.	आशापल्लीना ऐतिहासिक उल्लेख	पं. लालचंद लगवान गांधी	५८
५.	बद्रावती तीर्थ (आंडक) प्रतिभा-लेख-संग्रह	पू. मुनि श्री कंचनविजयज्ञ	६४
६.	विनयचन्द्रकृत सुधारक छीतराष्ट्रकम्	श्री. भंवरलालजी नाहटा	७२

नवी महाद्व

३. १०१) पू. आ. श्री. विजयरामसूरीश्वरज्ञ महाराजना सदुपदेशथी श्री डेलो नैन उपाश्रय, अमहावाह
३. १००) पू. आ. श्री. विजयसिद्धिसूरीश्वरज्ञ महाराजना सदुपदेशथी श्री सुआज्ञ रवयंद नैन विद्याशाला, अमहावाह
३. ५१) पू. मुनिश्री सुभतिसुनिज्ञना सदुपदेशथी श्री नैन पेढी, वागोला (राजस्थान)
३. ५०) पू. आ. श्री. विजयविज्ञानसूरीश्वरज्ञ महाराजना सदुपदेशथी श्री नेमिनाथ नैन उपाश्रय, पायधुनी, सुंभृष्ठि
३. २५) पू. आ. श्री. विजयचमृतसूरीश्वरज्ञ महाराजना सदुपदेशथी श्री आगरतङ नैन संघ, शान्तिनाथ नैन देशसर ने पेढी, दाहर-सुंभृष्ठि
३. २५) पू. उ. श्री. देवेन्द्रसागरज्ञ महाराजना सदुपदेशथी श्री साथरमती (रामनगर) नैन संघ, साथरमती
३. २५) पू. उ. श्री. कैलाससागरज्ञ महाराजना सदुपदेशथी श्री राणी नैन संघ, राणी (राजस्थान)
३. २५) पू. पं. श्री. कीर्तिमुनिज्ञ महाराजना सदुपदेशथी श्री गोधारी शानभंडर, गोधारी
३. २५) पू. पं. श्री. रमणिकविजयज्ञ महाराजना सदुपदेशथी श्री कीर्तिभद्रनी पेढी नैन उपाश्रय, अमहावाह
३. १५) पू. पं. श्री. मनोहरविजयज्ञ महाराजना सदुपदेशथी श्री नैन तपागच्छ उपाश्रयनी पेढी, पालिषुपुर
३. १२) पू. मुनिश्री गोतमसागरज्ञ महाराजना सदुपदेशथी श्री नेसाती भंडल, वडाली
३. ११) पू. पं. श्री. भानुविजयज्ञ महाराजना सदुपदेशथी श्री नैन संघ, एडा
३. ५) पू. आ. श्री. कीर्तिसागरसरिज्ञ महाराजना सदुपदेशथी श्री नैन सुधारा आतानी पेढी, भेसाणा
३. ५) पू. पं. श्री. कनकविजयज्ञ महाराजना सदुपदेशथी श्री उतमलाल मंडनज्ञ, दाधनपुर



॥ ॐ अर्हम् ॥

अखिल भारतवर्षीय जैन शेताम्बर मूर्तिपूजक

मुनिसम्मेलन संस्थापित

श्री जैनवर्म सत्यप्रकाशक समितिनुं मासिक मुख्यपत्र
जैशिंगभाईनी वाढ़ी : धीकांटा रोड : अमदावाद (गुजरात)
तंत्री : चीमनलाल गोकर्णदास शाह

वर्ष : २२

विक्रम सं. २०१३ : वीर नि. सं. २४८४ : ह. स. १८५७

क्रमांक

अंक : ३-४

पृष्ठ सुह १४ भंगणधार : १५ जानुव्र्यारी

२५५-५६

साच्ची शिक्षा

लेखक : श्री. रतिलाल हीच्यांड हेसार्ड

अमृथभती संघानी सिंहूरवर्षी आबा, उल्लैनीना राजभासाहे, हर्यो अने हेव-
मंहिरो उपर छेल्ली रगेला पूरीने, पोतानी कणा संतेली २८ी हती. रनानसुंदरीओ, हस्तीओ
अने धोणीओनी झीड़ाथेथी क्षुध अने उहोणां थेलेणा क्षिमाना जण, जाणे सूर्यभिंबने
पोताना अंतरमां समावी लेवा भाटे, धीरगंभीर-शांत घनीने वहेता हतां. भानीओ, पशुओ
अने पक्षीओ, द्विल आपाना थ्रम अने रजगापाट भाद, विआभनी आशाओ, पोतपोताना
निवासस्थान तरह उल्लासभेर पाणी इरता हतां. सुखनुं भोजन, आनंदखर्यो वातीविनोह
अने शांतिनी निद्राना भोरम स्वप्ननी छाया जाणे सर्वत्र प्रसरी रही हती. हेवमंहिरोनी
छेल्ली आरतीओनी झालरो अने हेवमंहिरोना निनादेथी उल्लैनीना राजभारो अने पाथि-
काओ, रणुआणी बेकवाने धरी-ऐ-धडीनी ज वार हती. सर्वत्र आनंद्यु वातावरणु विस्तर्युं हतु.

आवे समये उल्लैनीना एक विशाळ धर्मगार (उपाध्य) ना एक लांबा अंडमां एक
महापुरुष, पांजरे पडेला सिंहनी नेम, आभेम आंदा भारता हता. धडीकमां ए आधेभती
संघाना छेल्ला प्रकाशनुं दर्शन करता होय एम, आकाशनी सामे रिथर नथने निहाणा रहे
छे; तो धडीकमां ए, जाणे अंतरमां कृष्ण शेषता होय एम, कुभणहाणां पोताना नेत्रो नीचां
दाणा दे छे. एमना विशाळ नेत्रो गगनमां विहार करे के अंतरमां बनरी जाय, छां एमना
यरण्होने डोर्छ जातनी निरांत नथी. ए तो आपा अंडमां आमथी तेम अने तेमथी आम
धूमी ज रहा छे. अने एमना यरण्होनी आ सतत गतिशीलता जाणे एमना अंतरनी गतिशी-
लतानुं सूचन करी रहेल छे. एमना यरण्होनी गतिने आजे क्याय थंब नथी. एमना
अंतरने पणु आजे क्याय विआम नथी. ए तो एम एम ए. ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए
जितरता जाय छे. अरे, आ तो जाणे भनता चिंतनो वेग ज यरण्होने अस्थिर-वधु गति-
शील-अति वेगवान घनावी रहेल छे।

५०]

श्री. जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : २२

थे छे अमण्डुष्टेष्ठ, साहसकर अहाजानी आचार्य आर्थ कालक. पड़छंद काया, भव्य लक्षाट, आजन आहु, सुडोण नासिका अने गौर वर्षाना तेजपुंजयी कांतिमान लागता अे पुरुषने निषाण्या ज डरीओ, नीरभ्या ज डरीओ, जाणे आंगोमां ज सहाने भाटे समानी लाई ए। शु एनी लग्यता अने शु एनो ग्राव। योवनना तरवराटने शमावी लाई ने अने ग्रौटावस्थाना आवेगनुं पान. डरी लाई ने वार्धक्यनी गतिमाथी आपती ए काया जाणे, रिथर पुरुषार्थना पूंज सभी लासनी हती.

अमण्डुसंधना अधिनायक आर्थ कालकना उवननी साथे धतिहासनी टेवी डेवी गाथाए। वष्टुयेली हती ! अरे, भीनुं तो डीक, एक्की उल्लैती नगरीने एनो धतिहास पूछो अने ए हेयु थंबी जय एवी आपतीनी साहसकथा संख्यावे छे। राज तो उल्लैतीमां गमे तेहुं प्रवर्ततुं होय, पशु लोकहृदयना स्वाभी तो आर्थ कालक ज हता. तो ए निर्वन्ध हता, अकिंचन, अणुगार-घनदोलत डे घरभार वगरना एक सांधु पशु जाणे सर्वत्र अमनुं अयल साप्राजन्य प्रवर्ततुं हतुं. पशु हवे ज्वा हो धतिहासनी ए लाखी गौवक्या !

आवा पुरुषसिंह समा आर्थ कालकतुं चित आने चिंतामन अन्युं छे. ए चिंतामां शासनना धर्मना लविष्यनी विचारण्यानो भार लर्हो छे अने ए भार अमना तनते अने भनने ऐयेत भनावी रख्यो छे.

तेओ विचारे छे : धर्मनी धुरानो भार जेभने वहन करवानो छे ते अमण्डा-अणुगारा जो शानथी समृद्ध अने चारित्री शैलायभान नहीं होय तो शासनतु भावि उल्लवण नथी रहेवानुं ! शानमां इंगाल मानवीने चारित्री संपत्ति भगवी असक्य छे. शान तो चारित्रना-ज्ञवनशुक्ळिना. राजभार्गने अज्जवाणनार प्रदीप छे. ए प्रदीपने घोष भेसनार मानवीनुं ज्ञवन अंधकारथी ज व्यास अनी ज्वानुं. अने जो अमण्डा आवा अंधकारना ज भोग अन्या तो तो पछी शासननी ग्रावालनी वात ज क्यां करवानी रही !

आर्थ कालकनी विचारभाणा पण भर थंबी जय छे; जाणे डा हुःभक्त भाविना विचारना भार अमना अंतरने थंबानी हे छे. एमनी चिंता वधु धेरी बने छे; अने जाणे पोताना भननी वात वधु रप्त थती होय एम तेओ विचारे छे: अन्य अणुगारा के अमण्डानी वात शुं कर्ती ? आ भारा पोताना ज शिष्योने जुओ ने। शासननी रक्षा अने एमना कल्याण अटे हु केटेटला अनुयोगो (शास्त्रव्याख्या)नी रचना कटुं छुं अने केटेटला अनुयोगो एमनी आगण सरणतापूर्वक स्कुट कटुं छुं। पशु छे केटिने एनुं अहणु करवानी-अने समजवानी लेश पशु दरक्षार ! आ तो “ तमे कहेता लवा, अने एमे सांख्यता लवा ” नी एम जाणे वधु “ पृथर उपर पाणी ! ” लगवाननो धर्मभार्ग तो पलकवारनोय अभाद करवानी ना झेमावे छे; अने आ तो अधा जाणे अणसमां ज खुँचां छे। आ आणस अने आ प्रभाद जो चालु रहे तो संयमण्वन अने शासन अनेनो हास थाय. अजता धरनी जेम, सगी आणे आवा हास थतो नेया पछी निष्क्रिय अनीने ऐसी रहेवुं ए तो अने ज केम ? धरमां भोरीगानो ग्रनेश जेवा पछी शांत रही शकाय अरुं ? पशु आनो उपाय शुं करवो ?

अने आचार्य वधु अंतरमुख अनी गया.

आर्थ कालक जेटला विचारशील पुरुष हता तेथीय वधु ए कियाशील पुरुष हता. एक वातनो कर्तव्य होर पकडायो एरले अनो छेडा लाधे ज छुटको; भाव विचार करीने वात पडती

અંક : ૩-૪]

સાચી શિક્ષા

[૫૧

મુક્તવાની ત્યાં વાત જ ન હતી. શાસન અને સાધુજીવનના રાહુ સમા આ અનિષ્ટને દૂર ન કરીએ તો આ શાસન અને આ શક્તિ શા કામનાં ?

અને આર્થિકાલક વધુ વિચારમાં બેતરી ગયા; જાણે ડેઈ અંતિમ મહાનિર્ણયતું મનો-મંથન ચાલી રહ્યું હોય એવી ગંભીર રેખાઓ એમના વધન ઉપર અંકિત થઈ રહી. એમણે વિચાર્યું: રેગ પરખાઈ ગયો હતો; હવે તો એનો છલાજ જ શાધવાનો—અજમાવવાનો હતો. અને દેરા અનેતા રેગનો છલાજ જલદ નહીં હોય તો એ કાગળ નીવડવાનો નથી. વધુ આત્મદમન અને પોતાની જતની વધુ અશિપરીક્ષા એજ એક માત્ર છલાજ હતો.

ગગનાંગણમાં સર્થનારાથણે પોતાનો અંતિમ પ્રકાશ સંકેલી લીધો અને જાણે આચાર્યની ગંભીર વિચારણાનો પણ છેડો આવી ગયો. પોતાના મનની બધી ધૂંઘનો ઉકેલ લાધી ગયો હોય એમ આર્થિકાલકનું મન સ્વરસ્થ બની ગયું અને ફ્રાઇર કરતી એમની કાયા સ્થિર બની ગઈ. એક જરૂરાના જાંબર પાસે ખડા રહીને આચાર્યે જ્યારે પથરતાં અંધારા ઉપર નજર ફેરાતી ત્યારે પૂર્ણ સતોષની પ્રતિભાનાં તેજ એમના મુખ્યમણને વિકસાવી રહ્યાં હતાં.

નિર્ણય થઈ ચૂક્યો હતો; એના અમલની જ હવે વાર હતી। માર્ગ સાંપડી ગયો હતો; માત્ર પ્રથાણુની જ હવે ચિંતા હતી. આર્થિકાલક ધીમે ધીમે પોતાના સ્થાને પહોંચીને આત્મ-ચિંતનમાં મગન બની ગયા.

પણ પહેલી ધૂંઘવાયા કરતો સાગર જાણે પ્રશ્નાત બની ગયો. આત્મશોધનના મંત્રોના મહુર રવો હવામાં ગૂંજવા લાગ્યા.

[૨]

શાત્રનો અથમ પ્રહર વીતી ગયો હતો. ધર્મગાર શાતી હતું. સર્વ નિર્ણયો પૈતૌપૈતાના સંસ્તાનક (પથારી)ની તૈયારી કરતા હતા. આર્થિકાલક પોતાના આસને, અચલ મેરુની જેમ, સ્થિર બનીને બેઠા હતા; તેએ ડેઈના આગમનની રાહ જોતા હતા.

શાડી વારમાં શથ્યાતર (ઉપાશ્રયનો માલિક કે વ્યવસ્થાપક) આવી પહોંચ્યો અને આદર-પૂર્ણ નિકાલ-વાદના કરી આચાર્યની સમીપે એડો.

આર્થિકાલક ધર્મલાલના આશીર્વાદ આપી, શાધ્યાત્મને સાગર સમા ધીર-ગંભીર લાવે પોતાનો નિર્ણય કહેવા માંડ્યો. શથ્યાતર વિનિતભાવે આચાર્યની વાણી અંત્યી રહ્યો.

કાલક એદ્યા: “મહાતુલાવ! તમે જાણો છો, અને કદાચ ન જાણતા હો તો પણ અને આતરી થઈ છે, કે મારા આ શિષ્યો પ્રમત્ત બનીને અનુયોગ (શાસ્ત્ર)ના પઠન, મનન, ચિંતન મટ્યે ઉપેક્ષાભાવ સેવતા થયા છે. આમાં હું મારા શિષ્યોનું અકલ્યાણ, શાસનની હાની અને ભાર શુદ્ધપદ્ધની હીણપત્પત સ્પષ્ટ જોઈ છું. આ તો કેવળ વિનાશનો જ માર્ગ છે, એ માર્ગનું તો શિધાતિરીધ છેદન જ કરવું ધેરે.”

શથ્યાતર ભક્તિભાવે એદ્યાઃ “લગવાન, આપનું કહેવું સલ છે. આવતી કાલે જ આનો ઉપાય યોજાયું.”

આચાર્યઃ “આ દોષ તો બહુ જાંને જિતરી ગયો છે. કેટલાય હિન્દુની મારી મહેનત

४२

श्री. जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : २२

अने भारी शिखामणु उपर ऐसे पाणी झेवी दीखु छे. ऐटसे हवे तो तस्त ज आने धृत्याज करवो धरे; अने ए धृत्याज पण जलद ज होय।”

शथातरः “भवे भन्ते! जेवी आपनी आज्ञा। कासे ज अधा निर्णयोने ताकीद करीयु अने छतां नडीं माने तो तार्थज्ञ संघ तो ऐडो ज छे ने। डोनी भगवत् छे, ए संघनी आण्हा (आज्ञा) तु उत्थापन करी शके, सवार थाय ऐटली ज वार !”

आर्यकालक जरा रिमत आणुने ऐत्याः “ज्ञेणा भाविकज्ञन ! ज्ञेयोने भारी शिखा मणु अने भारी आज्ञा असर नथी करी शकती अने संघ शुं करी शकवानो छे? ए भार्ग तो अने डामनी सिद्ध थवानो नडीं पण उलेशनी वृद्धि थवानो ज लागे छे. आने माटे तो शेथी पण वधु जलद उपाय शोधवो धरे. अने ए उपाय शिखामणुनो, आज्ञानो, शिक्षानो नडीं पण आत्महमननो, पोतानी ज्ञतने कृष्मां मुक्तीने ए प्रेमनी पावकज्ञवाणीथी शिष्योना होप लक्ष्म करवानो छ्यो तो न ए सद्गु थशे. बीच रीते आ होप हूर थवो अशक्य छे.”

शथातर तो भियारो विचारमां गरकाव थर्थ ने मूढी जेम सांकणी रखो. अने थयुं: आवा संघसत्ताना प्रश्नमां आर्यार्थ लगवान आत्महमनथी पोतानी ज्ञतने कृष्मां मुक्तवानी वात करता हता अनो शा अर्थ? ऐसे अचकाता अचकाता पूछ्युः “आर्यार्थदेव! आ आत्महमन अने ज्ञतकृष्टनो भार्ग ऐटुे?”

“हुं तमने २५४ कहुं,” आर्य कालके भक्तम अवाजे कहुं, “महातुलाव! सांकणो. में भारा भन साथे निर्णयु करी लाइदा छे. आ शिष्योने शिखामणुनो के उपावंसनो एक शम्भ पणु कहेवानी हवे जरूर नथी. हवे तो ने इंध इत्यानुं छे ते भारी ज्ञत उपर ज करवानुं छे. हुं आवली काले ज सुवर्णुभूमिमा—ज्यां भारो प्रश्निष्प निर्णयंथ सागर अमणु शास्त्रोनु अध्ययन अने अनो. प्रयार करीने पोतानी संघमयावाने सद्गु करे छे अने प्रवन अननी प्रभावना करे छे त्या—विहार करी जर्हि. आवा अनुयोगना आणसु अने प्रभाव-प्रिय शिष्याथी सर्वुं !”

शथातर तो स्तप्त्य ज अनी गयो : “आर्यार्थ लगवान! आ वृद्ध उंमरे सुवर्णुभूमिना विहारनो आवो संकल्प! सेंडो जेजननो अति विकट ए पंथ! लयानक जंगले अने डिंसक पशुओथी व्याप ए भार्ग! प्रलु! आ अवस्थाए आवो निर्णय न होय! आ तो समस्त संघने शिक्षा करवा जेवुं लेअाय! क्षमा, युरु, क्षमा!”

आर्य कालके छेवटनी वात करी : “महातुलाव! एवी लावुक्ताथी काम न चाले. भारो निर्णय ए निर्णय! निमित्तशास्त्रनु भादुं ज्ञान मने स्पष्ट हशवि छे के आ होपने शुद्धारथानो एक भाव आ ज धृत्याज छे. अने ए धृत्याजनो अभल करवो ए भारो परम धर्म छे. भारा शिष्यो भारी शोध करे त्यारे तमे भौन सेवजे; अने ज्यारे थाकी-हारीने घूम आगहपूर्वक तमने पूछे तो तमे अभने एट्हुं ज कहेन्नो के तमाराथी इंद्रणाने तमारा शुरु सुवर्णुभूमिमा सागर अमणु पासे विहार करी गया छे.”

शथातर भियारो शुं ऐसे? ए तो इका ‘ज’ करीने भारे हैये आर्यार्थनी आज्ञा शिरोमान्य करी रखो.

[ज्ञेया अनुसंधान याता ५४ उपर]

અનારસ

સોણ કલ્યાણકેની ભૂમિ

લેખક : - શ્રી. માહુનલાલ દીપચંહ ચાકડી

અનારસ પાસેના સારનાથમાં બૌધ્ધભર્તા ‘મુળગંધકુટિવિહાર’ આવેલ છે, ત્યાં એક પ્રાચીન રસ્તું છે, તેમ જ પૈદાકામ કરતાં ધણી જૂની વસ્તુઓ તેમ જ ખુદ લગવાનની ભૂત્તિઓ નીકળેલી છે, તેનું એક સુદૂર મહાનમાં સંપ્રાણસ્થાન છે. ગયા વર્ષે અને આ વર્ષમાં ત્યાં સંપ્રાણંધ સિક્ષુઓતું તેમ જ લારતની બધારાના દ્રોષિમાંથી ધણા વિદ્ધાનેતું આગમન ચાલુ રહ્યું છે. એમાં સરકારે પણ રસ્તાની ભરામત આહિ કર્યોમાં અતિ મેટી રકમની ભરદ્વારા આપવાથી આજે તો અનારસ યાને કાશીમાં આગંતુડો માટે તે એક દર્શનીય સ્થળ બની રહેલ છે. એના આકર્ષણો થોડો અધ્યાત્મ આપી, એહી વર્ષ દાઢે લાખો ઇપિયા ખરચાતો જૈન સમાજનું ધ્યાન ઘેંચવાનો અને આપણી આ મહત્વની કલ્યાણક ભૂમિનો દેશકળના એંધાણું પારખી, એ આકર્ષક બની રહ્યે તેવી રીતે ઉક્ખાર કરી, જગત સન્મુખ એની મહત્ત્વાં રણ્ણ કરવાની એને પ્રેરણાં જરૂરે તેમ ડરવાનો આશય છે.

જ્યારથી યાનિકો માટે રોપેશિયલ ટ્રેનો નીકળવાનું શરૂ થયેલ છે ત્યારથી ગૂજરાત, માર્વાડ તેમ જ દક્ષિણ આહિ પ્રેરણોમાંથી ઠીક સંપ્રાણમાં યાત્રાગુણોતું આગમન થલા માઈયું છે. છતાં દિલ્ગારી પૂર્વક જણાવતું પડે છે કે પાચાપુરી અને સમેતશિખર જેવા સુખ્ય ધામને બાદ કરતા, એમના આગમનનો યથાર્થ લાલ ભીજુ કલ્યાણક ભૂમિઓને મળતો નથી. ભારે હોડાહોડીની, અને ગણતરીના કલાકોડોમાં એમાંની ધણીખરીની પરિક્રમા કરી દેવામાં આવે છે, એ પાછળનું રહસ્ય કે છતિહાસ જાણવા વિચારવાની બહુ શોધ તરફી બે છે !

હાલ તો અનારસનો વિચાર કરીએ. એક દિન્યાને જોતાં અહીં ચાલુ ચોવીસીના ચાર તિર્થપતિઓના સોણ કલ્યાણકે થયેલાં છે અને એનું એ કારણે ભારે મહત્વ ગણુંથી. બેણુપુર નામના પરામાં પુરાણાની શ્રી. પાર્શ્વનાથ પ્રભુના ચ્યબન, જન્મ, દીક્ષા અને કેવળસાન ઇપ ચાર કલ્યાણક થયાં છે. એ જ મુજબ બહેનીધાટમાં સાતમા શ્રીસુપાર્શ્વનાથના એ, તેમજ એની નજિકમાં આવેલ ચાર આર્થિક પરની સિંહપુરીમાં અગિયારમા શ્રીશ્રીયાસનાથના અને ચોહ માર્ખલ દૂર આવેલ ચંદ્રપુરી થાને ચંદ્રાવતીમાં આઠમા શ્રીચંપ્રભુના ચાર કલ્યાણક થયેલાં છે. આમ જાં આપણે જોકશું તો એ દેરેક સ્થળો સાવ સામાન્ય રીતના છે. ચંદ્રપુરી ને બહેનીધાટ તો અટલા પડચા જેવા ને જરૂરીત દશાવાળા કહી શકાય. કરતી વર્ષંશાળા વચ્ચે આવેલ બેણુપુરતું મંહિર અને સારી સડકના અભાવે એકાદ ખૂણે પરી ગયેલ સિંહપુરી કંઈક વધુ આકર્ષણું વરાવે છે.

પણ સારનાથના ખુદ દેવાલથનો, એમાં દીવાલ પર આદેખાયેલા લ૦ ખુદના જીવન-પ્રસ્તુતિના દર્શક, રમણિય ને કળામય ચિત્રોનો તેમ જ ત્યાં વર્તતી શાંતિનો વિચાર કરીએ ત્યારે ધડીભર લાગે છે કે આપણામાં સાચી જક્કિન ને યથાર્થ જાન છે કે ? આ ઉપાસકોમાં એ

५४]

श्री नैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : २२

भरेलु अने पचावेलु नयने चढे छे. कणाभय एक ज व्रतिमा डेवुं आकर्षणु जन्मावे छे ? थोडा सामान्य दीपुक अने कणाभय रीते चटावेल थोड़ा पुण्यो डेवो. आव घेठा करे छे । घेला चित्रो अक्षु आगण साराये तेमना ज्वन अने क्वननो. चितार रजू करे छे. अथी छद्यमां जे लावो हीलोने चढे छे ते वर्षावी शक्य तेवा नथी होतां ए अनुभवनो विषय छे. आपणी उपर वर्षावेली कल्याणुक भूमिकामां पणु आ जातनुं वातावरणु सर्ववानी खास अगत्य छे. आने ने सामग्री तेम ज साधनोनी ऐहरकारी भरी गोडवणु दृष्टिगोचर थाय छे एताथी जे निवृत्पूर्ष भाव जन्माववानी वृत्ति जऱी छे ते संख्यित बनी शक्ती नथी. आपणी कल्याणुक भूमिका आजना युगमां डेवा ग्रकारनी होवी धडे तेम ज यानिकी अहोनी स्पर्शना डेवी रीते कर्वी जऱी छे तेनो विचार करवो. आवश्यक छे ते हवे पछी करीयु.

(अपूर्ण)

किंपाइनां इणो स्वाहमां भधुर लागे छे तेम ज इपे-२ंगे पणु भनहर देखाय छे; परन्तु न्यारे तेमने आवामां आवे छे अने तेमनी पूरेपूरी असर शरीर उपर थाय छे, स्यारे ते ज इपाणां अने मीठां इणो ज्वननो नाश करी नाए छे. ए ज परिणाम कामबोगेनी आपतमां पणु समझ लेवानु छे. लोगवती वधते तो कामबोगो. भधुर, भधुरतर अने भधुरतम लागे छे, पणु परिणामे एटले न्यारे तेनी पूरेपूरी असर आत्मा उपर थाय छे त्यारे ते ज भधुर कामबोगो. आत्मानो, कुङ्कुमनो अने समाजनो तो हीक पणु समग्र विश्वनाथ संहार करी नाए छे.

—भग्नावीर वाणी

[अनुसंधान पाना पर तुं चाहु]

ऐने आश्चर्यन आपता होय एम आर्थ कालके कहुँ : “महातुमाव ! आमां शाय करेशो नहि, हुःभ लगाइशो नहि. आ तो धर्मनो भार्ग छे; अने तमे नक्की मानने के अथी छेवटे आ शिष्योनुं कल्याणु अने शासननी प्रभावना ज थवानी छे.”

शय्यातरना भन उपर तो जाणे हिमालयनो ऐज पडी गये, पणु आर्थ कालकनुं भन तो कर्तव्यनो. भार्ग स्त्रीकार्याना परम सोताप्ती प्रकृत्व दहु. उल्लैनना एक जुद्दी राजने शिक्षा करवाने भाटे पारस्कुल (धर्शन) सुधीनो. प्रवास ऐडनार आचार्यने भन गोताना शिष्योने सुधारवा भाटेनो सुवर्णभूमिनो सेंडो. जोग्ननो विकट प्रवास पणु जाणे रमतनी ज वात बनी गये. हतो.

अने ए ज रात्रे, न्यारे धर्मगारना बंधा निर्झो अने उल्लैनी नगरीनां नर-नारीओ गाद निकामां पोटवा हतां त्यारे, आर्थ कालक सुवर्णभूमि प्रत्ये विहार करता हता. आकाशना अरीसा समो चांद, इपुं रेलावती चांदनी अने झञ्जुङ दीवडा समा भवदभ तारलिया आ कठोर कर्तव्य परामर्शनानां साक्षी बनी, आचार्यना पंथमां जाणे हर्षनां पुण्यो पाथरी रख्यां हतां.

(अपूर्ण)

કાંબ્યશાસ્ત્રી યશોવિજયગણિ

લેખક : પ્રો. હીરાલાલ ર. કાપડિયા એમ. એ.

ભાષાના ઉદ્ઘાત પછી ભાષાના સ્વરૂપાહિનો બોધ કરાવવા માટે તેમજ એ વિકૃત થતી અટકે તે માટે જેમ વ્યાકરણની રૂચના કરાય છે જેમ સામાન્ય રીતે જેમ મનાય છે, તેમ કાંબ્યો રૂચાથા બાદ અની શાસ્ત્રીય ચર્ચા માટે કાંબ્યશાસ્ત્રી યોજના સંભવે એમ મનાતું હોય તો ના નહિ. એ ગમે તે હો પણ એક જ વ્યક્તિ કાંબ્યો પણ રહે—કવિ તરીકે નામના મેળવે અને સાથે સાથે વિહૃદોગ્ય કાંબ્યશાસ્ત્ર પણ રહે એવી ધરના અદ્ય પ્રમાણુમાં બને. લૈન સાહિત્યનો વિચાર કરીશું તો જણાશે કે આ સાહિત્ય પણ આ પરિસ્થિતિથી પર નથી. કવિ અને સાથે સાથે કાંબ્યશાસ્ત્રી પણ હોય એવી લૈન વ્યક્તિઓ તરીકે બ્યુલ્લાટિસ્ટ્સરિ, ‘કાવિકાલસર્વત્ર’ હેમચન્દ્રસરિ, વાયડ ગર્ઝના અમરચન્દ્રસરિ અને ન્યાયવિશારદ ન્યાયાર્થી યશોવિજયગણિનો હું ઉદ્દેખ કરું છું. આ યશોવિજયગણિ પ્રબળ તાર્કિક તરીકે તેમજ ચ્યાર ભાષાના ગણનાપાત્ર કવિ તરીકે જેટલા સુપ્રસિદ્ધ છે એટલા કાંબ્યશાસ્ત્રી તરીકે જણ્ણીતા નથી એથી એમનો આ રીતનો પરિયય આપવા હું પ્રેરણો છું અને એનું ફળ તે આ પ્રસ્તુત લેખ છે :

યશોવિજયગણિની જે કૃતિઓ ઉપલબ્ધ તેમજ અનુપલબ્ધ જણાવામાં છે તેમાં તો અણિએ કાંબ્યશાસ્ત્રને અંગે કોઈ સ્વતંત્ર કૃતિ રહ્યાતું જણાતું નથી. એમણે નિમનલિખિત કૃતિઓ ઉપર સંસ્કૃતમાં વૃત્તિ રહ્યી છે :—

(૧) ભામટ કૃત કાંબ્યપ્રકાશ.

(૨) ‘કલિ.’ હેમચન્દ્રસરિકૃત કાંબ્યાનુશાસનની સ્વોપ્તિ વૃત્તિ નામે અલાંકાર-ચુડામણિ.

આ ઉપરાં ‘વાયડ’ ગણના અમરચન્દ્રસરિકૃત કાંબ્યકલ્પલતા ઉપર પણ એમણે વૃત્તિ રહ્યી એમ ડેટલાઇન્ટ કહેલું છે.

યશોવિજયગણિએ પોતાની કોઈ કૃતિમાં કાંબ્યપ્રકાશ ઉપર પોતે વૃત્તિ રહ્યાનો ઉદ્દેખ કર્યો છે અરો ? આકુ પ્રતિમાશીતકના ત્રીજા પદ્ધતિ તેમજ નવમા પદ્ધતિ સ્વોપ્તિ વૃત્તિમાં “કાંબ્યપ્રકાશકાર” એવો ઉદ્દેખ કરી એમનો—ભામટનો ભત દર્શાવ્યો છે. સદ્ગાર્યે કાંબ્યપ્રકાશની વૃત્તિની એક અધ્યરૂપું દાખલેથી મળે છે. એ બીજા અને ત્રીજ ઉદ્દ્વાસને અંગે છે. એના વિવિધ ભતો દર્શાવી એની યશોવિજયગણિએ પોતાની અલિપ્રાય દર્શાવ્યો છે. જિનરત્નકારા (વિભાગ ૧, પૃ. ૬૦)માં A Descriptive Catalogue of manuscripts in the Jain Bhandars at Pattan (Vol. I, p. 107)ની નોંધ છે અને એ દરા પાઠણના લંડારમાં કાંબ્યપ્રકાશની ઉપર્કુલ વૃત્તિ હેવાનો ઉદ્દેખ કર્યો છે, પણ આ સર્વીપત્રના ? આ પાના ઉપર તો આ વૃત્તિનો ઉદ્દેખ જણાતો નથી તેતું ડેમ ?

૧. મુખ્યપુષ્ટ ઉપર આતું નામ પત્તનસ્થ પ્રાચ્યજૈતમાણાગરીયપ્રનથસૂચી છે.

५६]

श्री. जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : २२

जे आ वृत्तिनी तांडवीय प्रत पाठयुना लंडरमां होय तो ए छपावची धटे।
अलंकारस्युदाभिष्ठि उपर यशाविज्ञगणिष्ठे वृत्ति रची छे ए वात प्रतिभाशतक
(श्लो. ८)मी स्वेपज्ञ वृत्ति (पत्र ३०)मानी निम्न विभित पंक्ति उपरथी इक्षित थाय छे :—

“ प्रपञ्चितं चैतदलङ्कारचूडामणि वृत्तावस्मामिः ॥ ”

आ वृत्ति अत्यार सुंदी तो भण्डा आपी नधी।

उपर्युक्ता नवमा श्लोडना उत्तरार्धमां कहु छे के ने अहो—जैन शासनमां-जिननी भूतिने जिनना समान न जाणे तेवा पुरुषने क्यों पंक्ति अनुभ्य जाणे ? तेने तो शींगडा अने पूछा वगरनो स्पष्टपणे पशु जाणे। आ संबंधमां स्वेपज्ञ वृत्ति (पत्र ३०)मां नीचे मुख्य कथन छे :

“ शृङ्गपुच्छासवमत्रेण तस्य पशोर्धम्यम्, नान्यादित्यर्थः । व्यतिरेकालङ्कारगमोऽत्राशेषः । उपमानाद् यदन्यस्य व्यतिरेकः स एव स इति काव्यप्रकाशकारः । न च व्यतिरेक उत्कर्ष इत्यत्रानु-क्रिसम्भवः ।

“ हनुमदायैर्यशसां मया पुन—

द्विंशं हृसैर्दुर्यथपदः २ सितीकृतः “३ इत्यादावपर्क्षेष्वपि तददर्शनात् । प्रपञ्चितं...स्मामिः । ” आनो अर्थ ए छे के ते पुरुषमां अने पशुमां, शींगडा अने पूछाना अलाव पूरुतं ज वैधम्य छे—तद्वावत छे। अहो ‘व्यतिरेक’ अलंकारी गरिंत ‘आक्षेप’ छे। उपमानाथी अन्यनो ने व्यतिरेक अर्थात् वैधम्य थाय ते ज व्यतिरेक ते ‘व्यतिरेक’ अलंकार छे एम काँथप्रकाशना क्तानुं केहुन्हु छे। व्यतिरेकमां उत्कर्षं होन्हो नेहुये अर्थात् अपकर्षं नहि एम डार्छ शंका करे तो ते योग्य नथी, डमके

“ हनुमदा...सिक्तीतः ”४... धर्त्याहिमां अपकर्षमां पशु ‘व्यतिरेक’ अलंकार जेवाय छे। आ वात अमे अलंकारस्युदाभिष्ठिनी वृत्तिमां यर्थी छे।

आम ने अलंकारस्युदाभिष्ठिनी वृत्तिनो अने एम आलेखायेली आर्थतनो जेम प्रतिभाशतकनी स्वेपज्ञ वृत्तिमां उद्देख छे तेम यशाविज्ञगणिनी अन्य डार्छ दृतिमां छे ? जे होय तो ते उद्देख एकत्रित करवा धटे।

प्रतिभाशतकना नवमा श्लोडने अगे जेम अलंकारनो उद्देख छे तेम एना धीन पशु डेटवाक श्लोड माटे एनी स्वेपज्ञ वृत्तिमां उद्देख छे। एना आधारे वक्तव मुख्यां नयुभाई ए प्रतिभाशतकना अने एना उपरनी आवप्रक्षस्मृतिन लघुवृत्तिना आपांतरमां के ने लीभरी भाषेडे वि. सं. १६५८ भां भूल सहित प्रकाशित कर्यु छे तेमां नोंध लाधी छे। आ आर्थत हु नीये मुझ्य रङ्गु करु छुः :—

२. “ दूतपदः ” ए पाठ सुदित पुस्तकमां जेनाथ छे अने ए समुचित जणाय छे।

३. आ शी हर्षकृत नैषधर्थरित (सर्ग ६)ना १२२भा पद्यनो उत्तरार्ध छे।

४ आनो अर्थ ए छे के हनमान वगेश्वरे दूतनो मार्गं यश पडे श्वेत अनांयो छे। न्याये ये (नये) तो ए कार्यं दृश्यमेना हास्य वडे कर्यु छे एट्टेके हु दृश्यमेना हांसीपात्र अन्यो छुः,

અંક : ૩-૪]

કાંયશાસ્ત્રી યોગિજીનાનાના

[૫૭]

શ્લોકાંક	સ્વેપણ વૃત્તિ (પત્રાંક)	ભાષાંતર (પૃષ્ઠાંક)	અવાંકાર
૨	૫	૬	ઉત્પ્રેક્ષા અને ઉપમા
૩	૧૧	૧૧	સ્વરૂપોત્પ્રેક્ષા
૪	૧૬-૧૭	૧૩	ઉપકરણ અતિશયોક્તિ અને અસંખ્યાંધમાં સંખ્યાંધ્રિપ અતિશયોક્તિ
૫	૧૭	૧૪	કાંયલિંગથી ઉહુભવતી અતિશયોક્તિ
૮	૨૩	૨૦	ઉપમા
૯	૩૦	૨૨	વ્યતિરેક ગલિર્ત આક્ષેપ
૧૦	૩૫	૨૪	વિનોક્તિ, રૂપ અને કાંયલિંગ અને એ ત્રણુથી ઉહુભવતો સંકર
૧૧	૪૨૫	૨૫	નિર્દ્દર્શના અને અતિશયોક્તિ
૧૬	૬૫૬	૩૫	પ્રયોગિકતા અને ગમ્યોત્પ્રેક્ષા

જીઓ ૨૦ ડો. (વિભાગ ૧, પૃ. ૮૮) માં અમરચન્દ્રસરિકૃત કાંયકલપલતાને અંગેની વિવિધ વૃત્તિની નોંધ છે. એમાં ૩૨૫૦ શ્લોક જ્યેઠી વૃત્તિ યોગિજયે રચ્યાનો અને એની એક હાથપોથી અમદાવાહની હાજ (ન) પેટની પોળમાં આવેલા 'વિમલ' ગણના ઉપાશ્રયના ભંડારમાંના પાંચમાં હાથપોથી એલું હાથપોથી તરફ હોવાનો ઉલ્લેખ છે. આ હાથપોથી નજરે જોયા વિના આ વૃત્તિ વિષે વિશેષ શું છુટી રાકાય ? બીજું, આ યોગિજય તે પ્રસ્તુત ન્યાયાં ચાર્ય, છે કે ડેમ તેની પણ તપાસ થની ધટે, ડેમકે એ નામના અન્ય મુનિવર થઈ ગયા છે. આથી આ ભંડારની હાથપોથી જેને જોવા મળ્યું શકે તેમ હોય તેઓ આ બાયત મ્રકાશ માઝવાં કૃત્યા કરે એવી ભારી તેમને સાદ્ર વિરસિ છે. એવી એ ઉમેરીશ કે, વજનેનનાં શિષ્ય હુસિયો (હુસિયો) કર્મદ્રષ્ટકર નામની જે કૃતિ રચ્યી છે તેની એક એક શીકા યોગિજયગણિયે રચ્યાનો. જીઓ ૨૦ ડો. (વિભાગ ૧, પૃ. ૬૬) માં ઉલ્લેખ છે. તો શું આ ગણ્ય તે પ્રસ્તુત ન્યાયાચાર્ય જી છે ?

આ વૃત્તિની હાથપોથીએં અમદાવાહના ડેલાના ઉપાશ્રયના ભોંયતળિયાના ભંડારમાં તેમજ ફહેલા માળના ભંડારમાં હોવાનો અહીં ઉલ્લેખ છે.

૫ અહીં અગ્રનો ઉલ્લેખ છે.

૬ આહી 'હૈમ' એવા ઉલ્લેખ છે. આવા ઉલ્લેખો એકત્રિત કરાય તો રત્નાપણમાં લેમ 'હૈમ' કાંયાતુશાસનમાંથી અવતરણ અપાયાં છે તેમ યોગિજયગણિયે ડેટલાં અને કયા આખ્યાં છે તે જાણી રાકાય.

૭ એમણે વિષાધિસાર રચ્યાનો ઉલ્લેખ કર્મદ્રષ્ટકરના અંતમાં છે. શું આ કૃતિ કોઈ સ્થળે છે ખરી ?

આશાપદ્લીના ઐતિહાસિક ઉદ્ઘેષો

લેખક : પં. લાલચંદ લગવાન ગાંધી-વડોદરા.

[ગર્ભાંધી ચાલુ]

સુધારીને વાંચો :

આ ભાસિકના વર્ષ ૨૨: અંક ૨: ફેબ્રુઆરી ૨૫૪ માં આ જ લેખનો પહેલો હૃતો છ્યાયો છે. તેમાં પાના ૩૪ માં પર ને ખીજો કરો ‘મલધારી.....પૃ. ૩૧૪-૩૨૩)’ સુધીનો છ્યાયો છે તેના બદલે પાના ૩૬ પર ને તીજો કરો કં. ૧૧૬ ઉવાગો ‘મલધારી.....પૃ. ૩૧૪ થી ૩૨૩)’ છ્યાયો છે તે પ્રમાણુભૂત છે.

વિડુભની તેચ્છી સહીમાં

મહારાજા કુમારપાલના શાન્દ્ય-સમયમાં વિ. સ. ૧૨૨૧માં માધ વાહિમાં અહિના (આશાપદ્લીના) શ્રીવિદ્યામહિમાં પં. વયરસીએ લખેલ, આચાર્ય શ્રીહેમયંદ-વિરચિત સ્વિદ્ધેમયંદ શાન્દ્યનુશાસન-લધુવત્તિનું તાડપત્રીય પુરતંક પાઠણના સંધીપાઠના ભંડરમાં વિદ્યમાન છે.

વિ. સ. ૧૨૪૮માં આધ્યાત્મ શુ. ૬ સેમવારે આ જ આશાપદ્લીમાં હૃતનાયક અભિયાનના અધિકાર-સમયમાં લખાગેલી દૃશ્વૈકાલિક સુત્તની લધુરીકાની તાડપત્રીય પુરિતકા પાઠણના નૈતસંધના ભંડરમાં વિદ્યમાન છે.^{૧૦}

ધીળકામાં રણ્ણાંજળના મંહિરમાં રણ્ણાંજળની ભૂર્ણિની પાઠણ રહેલો એક શિક્ષાલેખ જણાવાર્થ આયો છે, તે ઉદ્ઘયન-વિહારની પ્રશાસ્ત્રના પાઠણના તીજા ભાગશ્ય (૨૬૦. ૭૧ થી ૧૦૪) છે. પ્રયોગશતકર મહાકવિ રામયંદ (સુપ્રચિક્ષ આચાર્ય શ્રીહેમયંદના પટ્ટધર)ની એ કૃતિ છે. એમાં જણાયા પ્રમાણે આચાર્ય શ્રીહેમયંદનો આદેશ લઈ ભનેઢર એ ઉદ્ઘયન-ભિહાર વાગબદ મંત્રીએ કરાયો હતો.^{૧૧} પતન (પાઠણ)ના કુમારવિદ્યાર મૈલ વર્ગેરેનું તેમાં સ્નયુ હોઈ એ જિનનમટિર તથા પ્રશાસ્ત્ર-શિક્ષાલેખ કુમારપાલ ભૂપાલના

૩. “સંવત् ૧૨૨૧ વર્ષે માધવદિ બુવે અયેહ આશા[પલ્લયાં] શ્રીવિદ્યામઠે લધુવત્તિપુસ્તકા પંડિતવ્યરસીકેનાલેખિ ।”

—લધ્યા પાઠણ જૈન ભંડર-અંથસૂચી ગા. એ. સિ. ભા. ૧, પૃ. ૩૦

૧૦. “સંવત् ૧૨૪૮ વર્ષે શ્રાવણશુદ્ધ ૯ સોમે અયેહ શ્રીઆશાપલ્લયાં દંડ. શ્રીઅમ્ભયંડ-પ્રતિપત્તૌ લધુદશર્વૈકાલિકાટીકા સમાપ્તા ।”

—પાઠણ જૈન ભંડર-અંથસૂચી ભા. ૧, પૃ. ૩૮૮

૧૧ “ઉપહસિત-સુરવિમાન

સમર્પણીકીકુલમૂલ-ગ્રંથોઽત્કીર્તિશાલિનાય ।

શ્રીહેમશ્વાન્દ્રસૂરીગામાદાવાદેશવૈભવમ् ॥

“ઉદ્ઘયન-વિહારમેં વ્યધપયદ્ બાગમટો મંત્રી ॥૧૦૧॥

પ્રબ્રદ્ધશતનિમિત્તિ-પ્રથિતકીર્તિકામ્યોદયઃ । પ્રશસ્તિમતુલામિમામણૃત દામશ્વાન્દ્રો સુનિઃ ॥”

अंक ३-४]

आशापद्धतीना ऐतिहसिक उल्लेख।

[५६

राज्य कालना कडी शक्ति. संभावना प्रभाषे ए प्रशस्ति आशापद्धतीना उपर्युक्ता उद्द्यन विहारे उद्देशी रथारेवी जग्याय छे.

—आ संबंधमां ‘उद्द्यन-विहार’ नामना एक लेख अमे गत वर्षमां ओरियन्टल कॉन्फरेन्सना अमावास्या छेत्वा अधिवेशनमां हिंदीमा रजू को होतो. अमावास्यामध्ये प्रकाशित थता ‘नैन सत्य प्रकाश’ भासिकना गत वर्षना पांच अंडामां ते थोडा विस्तार साथे गूर्जरातीमां प्रसिद्ध थेले छे.

विक्रमी तेरमी सहीना पूर्वी लगभगमां आ आशापद्धतीना नगरीना मुखना तिलक समान उद्द्यन-विहार नामना थे. नैनमहिरनी भूर्तिए वंदन करवा थोड़ा नथी; ओवा एक वाद भरतरग्यन्त्रना जिनपतिसूर्यिए तथा तेमना अनुयायीओं ए कर्त्ता होतो, तेतु अंडन अर्हद(वड) गच्छना सुप्रसिद्ध वादी हैस्त्रिना शिष्य भर्हेन्द्रसूरिना शिष्य प्रद्वुम्नसूर्यिए तथा तेमना अनुयायीओं ए कर्त्ता होतु. अने पक्षकारों ये पौत्रप्राप्ताना भतना समर्थनमां जग्यावेल प्रभाषे. तथा युक्तिएवाणी ए अंगे ज्वेस्वरेर नैन अंगलंडारमां भणी आव्या छे, तेनी नक्ल वडोहराना आ. नैन जानमहिरनी विद्यमान छे. सन १६२१ भा. जे. ल. अंगसूरीनुं संपादन कर्ता-अप्रसिद्ध अंथ-अंथरूपरियमां (पृ. २८-२९) अमे ए वादस्थल अने झूमेधाय-वादस्थल नामना अंगेमाती जहरी अवतरणे दर्शाव्यां छे. ए पर्याय जाणी शक्ति तेम छे के उपर्युक्ता वाद आ आशापद्धतीमां लाऊर सभामां थयो होतो, ज्वेमां ते समयना त्याना अधिकारी द्वन्द्वाक अस्त्रयड वगेर विशिष्ट सभ्योनी हजारी हती. गूर्जरात भाटे गूर्जराता. शब्दनो अमां अपेक्ष छे, तथा आशापद्धती नामनो अमां अनेक वार निर्देश छे. १२

आचार्य श्रीजिनपतिसूरिनो सत्ता-समय सं. १२२३ था सं. १२७७ सुधी होतो. अथा ए वाद अने अंथ-रेयनानो समय ए हरभ्यान समलय छे. विशेष भाटे ज्वेमा जे. ल. अंगसूरी, तथा अप्रबंशकाव्यनवी (गा. ओ. सि.) नी भूमिका.

वि. सं. १२४(७)६ वर्षना दीपेत्सवमां१३ आ कुर्लावतीमां संजग्यन्त्रना आचार्य श्रीभाष्यकृत्यदेशं शांतिनाथयस्ति नामना आठ सर्गवाणी भण्डाकाव्यनी रचना करी हती. ज्वेमी १४७०मां लभायेली ताडपत्रीय योथीनी नक्ल पाठशाला संघर्षी पाइना लंडारमां छे. विशेष भाटे ज्वेमा पाठशु नैन ल. अंगसूरी (ला. १, पृ. २०३-२०५)

गा. ओ. सि. नं. १६ लेखपद्धति (प्र. सन १६२५ पृ. १६, २६, ३०)मां धर्म-

१२ “.....श्रीमूर्जेन्द्रोदरे श्रीमद्वाशापल्लीपुरेऽसंख्यक्षंख्यवन्मुह्यस्वपक्ष-परपक्ष-सामाजिक-समाज-समक्षं बहुशो नि.प्रश्नव्याकरणीयासामिः सिद्धान्तरहस्यवुवरसं पायिता अपि....”

“ आशापल्ली-वदन-तिलकायमानोदयनविहारान्तर्वर्तीने अहंद्विद्वानि यति-गृहिणां वन्दनीयानि । ”

“ × स्वयं स्वावदातोत्कीर्तनं तद् यद्याशसपद्धर्या तद्य त्वदुपात्क-दण्डनायकश्रीअप्यष्ट-प्रस्तुतिसमासदां समक्षं यद्भूत्, तत् संत्र गूर्जस्त्रायां प्रतीतम् । ”

—विशेष भाटे ज्वेमा जे. ल. अंगसूरी (अप्रसिद्ध० पृ० २८-२९)

१३ “ दीपोत्सवे शशिदिने श्रीमन्मार्गिक्यसूरिमिः ।

कार्णाविर्यां महापुर्यां श्रीग्रन्थोऽयं किनिर्मितः ॥ ”

६०]

श्री. जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष २२

चारिंडा, राजविसरसिंह वगेरे लेखेनी पद्धतिमां अलिनव सिद्धराज ज्यसिंहने उद्देशी महाभात्य आविगे लेखेलो लेख आशापद्धतीथी लभेत जणाव्यो छे, तेमज आशापद्धती राजधानीमां कुमारपालना विजयवंत राज्यमां, महाभात्य जगहेवना समयमां महाभात्य धरणीधरे विजयकटकमां रहेला सारंगहेवने उद्देशी लेखेलो लेख आशापद्धतीथी जणाव्यो छे, त्यां दर्शविला संवत् १२८८ वगेरे यथायेऽय जणावता नदी, तेम अतां ते ते महाराजांगेना समयमां आशापद्धतीनी महता समझ शकाय छे.

विकेमनी चौहामी सदीमां

जैन धार्मिक उपदेश अने आचार-विचारनां नानां नानां १३ नेटवां प्रा. सं. मङ्करणेनी एक ताडपत्रीय पाठ्य पुस्तिका पाठ्यना संघी पाडाना लंडारमां विवाहाने छे, जे वि. सं. १३३०मां आखिन शु. प गुरुवारना दिवसे आ ज आशापद्धतीमां लभायेत जणाव्यो छे. १४ जेमानी छेल्ली कृति आराधना प्राचीन गूर्जर लाखाभय गद्यमां होई गा. ओ. सि. नं. १४ प्राचीन गूर्जर काल्य संग्रहमां सन् १२८०मां प्रकाशित करवानी आवी छे.

विद्यासिंह अने वेजल्लहेनीना सुपुन भन्न-भयसिंहे रुचेल सुकुतारत्नाकर नामना ४३४० श्लोक प्रभाषु संस्कृत सुक्षिप्ति थ्रंथनी एक प्रति सं. १३४७मां आपाद वहि ८ गुरुवारे आ ज आशापद्धतीमां महं वारमे लभी होतो तेवो तेवा अंतमां उत्तरेख छे. १५ ने ताडपत्रीय पुस्तिका पाठ्यना संघी पाडाना लंडारमां विवाहाने छे.

हिल्लीथी वि. सं. १३५६मां अवावहीन सुखतानना नाना लाई उद्घोषने, भन्नी भावधवथी प्रेराई ने गूरुरात पर आङ्गमणु कर्तुं हु. वर्णेना अनेक नगरोते लागतो आ अमासावल्ली (अमासावल) र्यां पशु आऱ्या होतो, अने कुर्ण्हिव (भीजो) नासी गयो होतो, जेनी नेव आङ्गत साखाभय सत्यपुरतीर्थ-कृष्णमां तेना समकालीन जिन्नप्रभाससुरिये दीधी छे. ('श्रीगिनप्रभसुरि अने सुखतान महमह' पृ. १०४मां अमे ए जणाव्युं छे.)

गूरुरातना कवि प्रवनामे वि. सं. १३१२मां रुचेल कालडे-प्रभासमां पशु ए हुँध धटना वर्षी छे. अमासावहीना लक्ष्मे गूरुरात पर के होतो कर्तो होतो, गूरुरातना जे मुख्य नगरो भर तेहो उपदेव भयाव्यो होतो तेमां असाउलि नामनो निर्दीश छे, ते आ अमासावल समज्ञवु नेई ए. कवियो अंड १, कडी ६६-६८मां आ अमाव्ये जणाव्युं छे.-

"अमासावहीन पातसाह करी, तु वसतावी आणु. ६६

लाणी कटक उपदेव असाउलि, गढमाहि भेदलू थाणु. ६७

गुरुरात डेस हिलोल्यु, अति कीधूं तरडायु. ६८

असाउलि, धूलदुं, अंबायति, स्त्रूति नर्ध रानेह;

भीजों नगर डेलवां कडी॒, चंप॑ चांपानेर. ६९"

१४ "संवत् १३३० वर्षे अदिवनशुदि ५ गुरो अयोह आशापद्धत्यां"

—पाठ्य कैन लंडार थंथसूर्या ला. १, पृ० ११०-१११-

१५ "सं. १३४७ वर्षे आशाढवदि १ गुरो आशापद्धत्यां महं वीरमेन श्रीरनाकर-पुस्तिका लिखिता।"

—नव्यो गा. ओ. सि. पाठ्य कैन लंडार-थंथसूर्या ला. १, पृ० १३७-१३८

અંક : ૩-૪]

આશાપદ્લીના ઈતિહાસિક ઉલ્લેખો।

[૧૧

“—તેજપાલનો વિજય” પુ. ની પ્રસ્તાવના પુ. ૩૭માં અમે એ ઉલ્લેખ દર્શાવ્યો છે.

વિ. સં. ૧૩૩૪માં રચયેલા પ્રભાવકારિતમાં વાહિદેવસૂરિના ચરિત્રમાં તથા વિ. સં. ૧૩૬૧માં રચયેલા પ્રભાવકારિતામણિ વગેરમાં બહુધા કષ્ણૂરીવતી નામનો નિર્દેશ મળે છે.

વિ. સં. ૧૧૨૦થી સં. ૧૧૫૦ સુધી ગૂજરાતનું સામ્રાન્ય ભોગવનાર મહારાજા કર્ણદેવ આશાપદ્લી-નિવાસી આશા નામના લિઙ્ગ પર ચાર્દ કરી હતી, તે સમયે તેને બૈરવ-દેવીનું શદ્ગુણ થત્થા ડેંઘરથ નામની હેઠનો પ્રાસાદ કરાવી, ત્થા લાઘુના સ્વામી તે શર્વાર લિઙ્ગ પર વિજય મેળવ્યા પછી લાં પ્રાસાદમાં જ્યાંતિહેવીને સ્થાપન કરીને, કર્ણું ખર હેવનું આયતન તથા કર્ણસાગર તળાવથી અથંકૃત કર્ણૂરીવતી નગરી સ્થાપન કરી પોતે લાં રાન્ય કર્તો હતો.^{૧૬}

—વિ. સં. ૧૩૬૧માં મેરુંગસૂરિએ રચેલા સં. પ્રભાવકારિતામણિમાં એવા આશયનું સૂચન કર્યું છે.

કિન્લોક જે. ફાર્સ સાહેબની રચસમાળામાં એને અન્યત્ર ગૂજરાતના ઈતિહાસના પુરતોષમાં એના આધારે નોંધ કરેલી જથુાય છે.

મસ્માં ઉલ્લાસી શ્રીમાલવંશી ઉદ્દા નામના વણિક ભાગ્યથોગથી કુદુંઅ સાથે આ કર્ણૂરીવતીમાં ગયા હતા, લાં રહેલા વાયરીય (વાયરગઢના) જિનાયતનમાં દેવ-વંહન કરતા એ જાધમિક બંધુનો યોગ્ય અર્તિથ-સત્કાર ત્યાંની લાભ નામની છિંપિકા (ભાવસાર) આવિકારે કરી હતો. તેના ભાગ્ય-પ્રભાવે મદાનના આત્મસૂર્યતમાં નિધિ પ્રકટ થયો હતો. પાછળથી ઉદ્ધયનમંગી નામથી સુપ્રસિદ્ધ થયેલા, દેવ-ગુરુલક્ત, ધર્મશ્રદ્ધાળું એ મંનીશ્વરે આ કર્ણૂરીવતીમાં અતીત, અનાગત અને વર્તમાનકાલની વણે ચોચીશી (૭૨) જિનોની પ્રતિમાથી અથંકૃત ‘ઉદ્ધયન-વિહાર’ નામનો સુંદર પ્રાસાદ કરાવ્યો હતો.^{૧૭}

—વિ. સં. ૧૩૬૧માં મેરુંગસૂરિએ રચેલા સં. પ્રભાવકારિતામણિ (પ્ર. ૩) માં એનો ઉલ્લેખ છે.

—ટેલોક લેખકોએ ‘ઉદ્ધયનવિહાર’ ને અહે ભૂલથી^{૧૮} ‘ઉદ્દાખરાણ’ નું ભદ્ર જથુાયું છે, તે હવે સુધ્યારવાની જરૂર છે.

૧૬ “સ્વયં હું આશાપદ્લી-નિવાસિનમાશામિધાન મિલમાભિષેણયન् મૈખવેદ્યઃ શકુને જાતે કોછરાખામિધાનદેવ્યઃ પ્રાસાર્દ કારથિતા, ખડગ (ષદ) લક્ષાધિપ મિલ્લ વિજિત્ય, તત્ત્વ જયન્તી દેવોની પ્રાસારે સ્થાપયિત્વા, કર્ગેદરવેદવયતને તથા કર્ગેદરવરતદાગાલંકૃતો કર્ગાવતીપુરં નિવેશ્ય સ્વયં તત્ત્વ રજ્જ્વં ચકાર ।”

—પ્રભાવકારિતામણિ [પ્ર. ૩ સિક્કાનદિ પ્રભાવ]

૧૭ “.....કર્ગાવત્યા સન્તીયમિહિતે સ સકુદુમ્બસ્તત્ર ગતઃ ।

.....તત્ત: પ્રમૃતિ સ ઉદ્ધયનમલ્લીતિ નામના પણથે. તેન કર્ગાવત્યામતીતાનાગત-વર્તમાન-ખતુવિશતિજિન-સમલંકત: શ્રીઉદ્ધયનવિહાર: કારિત: ।” —પ્ર. થિ.

૧૮ “ભ્રિજદ્રાજના સમયર્માણાં શાંતુપ્રધાને શાંતુપ્રધાનિ અને ઉદ્ધાપ્રધાને જી જિનાદ્યયાળું ઉદ્ધધરાણ નામતું ભદ્ર કર્ણૂરીવતીમાં અધાર્યાના ઉલ્લેખો પણ છે”

—૩. લી.—ગૂજરાતનું પાઠનગર અમદાવાદ (પૃ. ૧૫)

३२]

श्री. नैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : ३२

वि. सं. १३३४ मां प्रभाचंद्रसूरिए रथेला प्रभावक्यरितमां वाही हेसूरि-यरितमां धोणकाना 'डिहा-वसति' नामना एक जिनमंहिरनो उल्लेख मળे छे ३—"पूज्य श्रीहेव-सूरिलुमे व्यवलक्ष्युर (धोणका) तरह विहार क्थीं हतो, त्यां उहय नामना धर्मनिष्ठ आगेवान गुहाव्ये सीमधरस्वामीनुं भिंथ कराव्युं हुं, तेनी प्रतिष्ठाविधि हेसूरिदारा करावी हती; ते चैत्य 'डिहा-वसति' नामथी आने पछु विघ्नान छे." (श्लो. ४८ थी ५२)

उपर्युक्त जिन-मंहिर, पूर्वोक्त उदयन-विहारथी स्पष्ट जुहुँ जलाय छे, धोणकाना उहय (उहा) अने सुप्रसिद्ध मंत्री॑वर उदयन ए अने लिन्न व्यक्ति जलाय छे, अने मंहिरनी भूतेओ अने तेनी प्रतिष्ठा करनार आचार्योनां नाम जुहाँ छे, स्थण पछु जुहाँ छे.

झार्खंस रासमाणा (२. उ. गू. लाखांतर) मां अहीं वसति शब्दनो अर्थ जिनचैत्य-जिनमंहिर न समज्ञाथी भंहिरने अद्वे अपासरो जलायो छे.

वि. सं. १३३४ मां प्रभाचंद्रसूरिए रथेला प्रभावक्यरित (२१ मा वाही हेसूरियरित)मां जलाव्युं छे ३ कुर्णीवतीना संवै१६ उत्कृष्ट थर्ड हेसूरिने२० चोमासा भाए आभंत्रयु कुर्णु हुं, तेथी रां तेओ पवार्या हता. शुद्ध उपाध्यमां रिथरता करी अरिष्टोभि-ग्रासाद सभीपमां तेओ सुरसु व्याख्यान करता हता.

एो ४ समयमां कुर्णीरेशना रागगुरु (सिङ्गराजनी भाता भयथुल्लाहीना पिता ज्य-कैशिहेना शुरु) अहंकारी हि. वाही कुमुखयंत्र ते ४ कुर्णीवतीमां वासुपूज्य-चैत्यमां चोमासा भाए आवेल हता. तेहे ३वे, वृद्ध साधीनुं अपमान करीने, पूर्वोक्त आचार्योने वाह करवा झरज वाही हती. तेना परिणामे धारणुनी राज-सलामां वि. सं. ११८१ मां तेनी हारै१ थर्ड हती.

विक्षमनी तेरभी सहीमां

विक्षमनी तेरभी सहीना उत्तरार्थमां वि. सं. १२८६ लगभगमां ज्यसिंहसूरिए रथेला हुम्भीरमध्येन नाटकमां कुर्णीवती नामथी आ आशापल्ली नगरीनुं संस्मरणु करवामा आव्यु छे. ते समेते ते नगरी पर वीरवध भग्नाराणाना पिता लाशुभ्रसाहनो अविकार जलाय छे. हुम्भीरना भहनु भहन करी, युक्ति-वातुर्थ अने प्रतापथी शत्रु-पक्षने जिनलिन्न इरी, नरविमान (सुआसन)मां ऐसी आशु तरक्षी धोणका तरह आवता वीरवधवल अने तेजःपालना संवादना इपमां कविये भार्मां आवतां स्थगेनुं वर्णन करतां जलाव्यु छे ३—

"वीरवध आंगणाथी दर्शनां कहे छे ३-महीदी भहिदाना कानना आशशु-हूल केही आ कुर्णीवती नगरी नयनना भार्मां आरी ४ छे. ए नगरीमां निरंतर तट पर अथडाता साक्षमती (सामरमती) ना तरंगझी वागता मुहंगना ध्वनिदारा लक्ष्मी अमारा पिता लाशुभ्रसाह देवना कर-कमलरूपी रंगमां नाचे छे.

तेजःपाल कहे छे ३-महीदंव-मंडन भग्नाराज! आ नगरीनुं सौहर्द्य कर्ती रीते कडी

१९ "अथ कण्ठविती-संबो"..... ८१

२० "संघ कण्ठवितीपुर्या: श्रीमन्तो देवत्वस्यः" ॥ ११९

२१ "संघ: कण्ठवितीपुर्या परवादिजयोर्जितम्" ॥ १२४

અંક : ૩-૪]

આશાપદ્લીના એતિહાસિક ઉલ્લેખો

[૬૩

શક્તાય ? જેની લદ્ધીને અદ્ભુત કરવા માટે સાધ્રમતી (સાધ્રમતી) નહીની લદ્ધરીઓમાં નાગલોકની નગરી અને ખોળ હેવેની મુરી (અમરાવતી) આકાશનહી ગંગા નહીની દેહિયમાન રજૂતમય દર્શાયે જેની ઉજાયલ લદ્ધરીઓમાં પડતા પ્રતિહિનોના બહાનાથી એ અને નગરીઓ નીચું મુખ રાખી જીવાંત ગાડ તપ કરતી જણાય છે. ૨૨

વિ. સં. ૧૨૮૮ ઈ. વ. ૧૪ રવિવારના, અણુહિલવાડ પાઠણમાં નિભુવનપાદતું રાજ્ય હતું. મંત્રીશર તેજપાલના તે સભ્યના એક શિકાલેખની નક્કે (કાગળ ૫૨) હાલમાં જાણ્યામાં આવેલ છે, તેમાં આશાપદ્લીથી આવેલા આચારો હેવસુરિ, અમસુરિ તથા ભલભસુરિના શિષ્ય તિલકપ્રભસુરિના નામોને નિર્દેશ છે.

વિદ્ધભની ચૌદ્ધભી સહીમાં

વિ. સં. ૧૩૧૩માં પોષ શુ. ૭ સેમે આ ૧૪ ૨૩આશાપદ્લીમાં શ્વે. ચા. પદપ્રભસુરિના શિષ્ય વાચનાચાર્ય વિનયકાર્તિ માટે સાર્વશતકવૃત્તિ (કર્મશ્રદ્ધ)ની તાપત્રીય પુરિતકા.

૬. વિલ્લષ્ણ લખી હતી, જે છાણીના જૈન જીવાં વિદ્ધમાન છે.
માંડવગઢના સુપ્રેસિક પૈથડશાહના પુન ઝોંઝે વિ. સં. ૧૩૪૦ માં ધર્મધીષસુરિ વિશે સંધ સાથે તીર્થયાત્રા કરી હતી. સંધ સાથે કણ્ઠાખતીમાં આવતો મહારાજ સારગહેવે તેનું સન્માન કર્યું હતું. સંધનીએ આ સ્થાનમાં પ્રીતિભોજન, સત્કાર આદ્ધિ રાજ તથા પ્રભ સર્વને સંતુષ્ટ કર્યા હતા. વિશેષ માટે જૂઓ-રેનમંડનગણિનું સુકૃતસાગર કાંય, રેનમંડિંગણિની ઉપરેશતરં ગિણ્ણી વિ.

[અપૂર્ણ]

૨૩ “ વીરઘંધલઃ (અંગુલ્યા દર્શયત्)—નયનર્માગમિયમાયાતૈવ મહીમહેલકણવિતસકુસુમં
કળ્ણાવતી નામ નગરી । યસ્યામનવરતમણિ,

તટસુફુટ-સાભ્રમતી-તરજ્ઞ-રક્ષન્યુદ્ધંઘંધનિતેન લક્ષ્યોः ।

અસમિત્યતુઃ શ્રીલબ્ધણપ્રસાદદેવસ્ય નર્નતિ કરાંજ-રહ્ને ॥

તેજઃપાણઃ-દેવ ! મહીમણ્ડલમણ્ડન ! કિમુદ્યતેડસ્યાશ્વચાસ્ત્વમ् ?

એકા સાધ્રમતી-સરિલહિરણુ સ્વૈર દ્વિતીયા વિયત-

કુલ્યા-વીચિષુ રોચમાનરજતાદર્શોઽજવલાસુ ધ્યબમ ।

તન્વાતે નિવિંડ તપઃ ફળિપુરી-ગીવર્ણપુર્ણો સદા,

ન્યાસુર્યૌ પરિલમ્બિબિસ્વમિષતો યસ્યા ગ્રહીતું શ્રિયમ् ॥”

—૫૩મિનમદમદ્દન નાટક (ગા. એ. સિ. ન. ૧૦ અંક ૫, પૃષ્ઠ ૪૮-૪૯)

૨૪ “ સંવત् ૧૩૧૩ વર્ષે પૌષશુદ્ધ ઉ સોમ અદ્યેહ આશાપદ્લીયાં શ્રીષ્ટાપ્રમસુરિશિષ્યનાંછિક-
શિરોમણિવાચનાચાર્યબ્રિનયકીર્તિયોગ્યસાર્ધશતકવૃત્તિપુરિતકા ઠ૦ વિલ્લણેન લિખિતા ॥ ”



ભદ્રાવતી તીર્થ (ભાંડક)

પ્રતિમા-લેખ-સંગ્રહ

સં. પુ. મુનિશ્રી કંચનવિજયજી

ભદ્રાવતી તીર્થ

દક્ષિણ અને ભધ્ય પ્રેરણના ત્રણ તીર્થો (શ્રીમાણિકંચનવામી-કુલપાક, શ્રીસ્વનન્દેવ ડેશરિય પાર્શ્વનાથ-ભદ્રાવતી, શ્રીઅંતરીક્ષ પાર્શ્વનાથ-દિવેપુર) આંતું આ એક ભદ્રાવતી (ભાંડક) તીર્થ છે. તે ભધ્ય પ્રેરણના વરાડ પ્રાંતના ચાંદા જિલ્લામાં આવેલું છે. ત્યાં જવા માટે વર્ધી જીંકશનથી બલારસા જતી ગાડીમાં ભાંડક (ભદ્રાવતી પાર્શ્વનાથ) સ્ટેશન આવે છે. તે સ્ટેશન વર્ધીયી દક્ષિણમાં પદ માઈલ પર છે. દક્ષિણમાંથી આવનારને હૈદરાબાદ કે મેજલાથી કાળ-પેંડ આવવાનું થાય છે અને ત્યાથી બલારસા આવે છે અને બલારસાથી વર્ધી જતી ટ્રોનમાં ઉત્તરમાં ભાંડક સ્ટેશન ૨૪મા માઈલ પર છે.

સ્ટેશનથી ભદ્રાવતી એક માઈલ છે. ત્યાં જવા પાડી સડક છે. કારખાના તરફથી રાતની અને દિવસની મળી ચારે ગાડીઓ ઉપર બળગાડી આવે છે.

આ તીર્થ અગેના ઘર્તિહાસ ને પુરાતસ્વની અંગે ટેટલીક વાતોનો મુનિરાજશ્રી જંખુવિજય-જીએ 'ભદ્રાવતી પાર્શ્વનાથ તીર્થ' નામનો લેખ ખખી શ્રીઆત્માનું પ્રકાશમાં (તા. ૧૪-૧૧-૧૯૫૦ મા) પ્રગટ કરાવ્યો છે, તેથી તે વાતો ત્યાં જેવા ભલામણ છે. પરંતુ પ્રતિમાજીના પ્રગટ થયા પછીનો ઘર્તિહાસ અને ભહિમા તથા ડેટલાક સ્થાપત્ય અંગે સામગ્રી મેળવી જવિષ્યમાં લેખ લખવા હું દર્શાવ્યું છું. આથી અતે પાણાણના તેમ જ ધાતુપ્રતિમાના લેખના અંગે ઉપ્યોગી વાતોનો જ ઉલ્લેખ કરીશ.

પ્રતિમાનો પાહુબાળ

એક વખત ભાંડકના જંગલોમાં ફરતાં પાહુબીએ પ્રતિમા જેયા. તેથી સરકારને ખખર આપી. આ બાજુ શ્રીઅંતરીક્ષ પાર્શ્વનાથજીના મુનિમને સ્વપ્ને આવ્યું તપાસ ચાલી. પ્રલુની જેટ થઈ. ચાંદાઆદિ સંધના ઉદ્ઘોથી કંઘને મળ્યો. એટલે કે સં. ૧૯૬૩ના માછ સુદ્ધ પાંચમે સ્વપ્નનું આવ્યું અને *૧૯૭૧ના ફાગણ સુદ્ધ ઉના દિવસે તપાગદ્ધાચાર્થ શ્રીજયમુદ્રિ દ્વારા પ્રતિથિ થઈ.

પ્રતિથિ કરવા માટે ભુરાનખુર લગેરે ગામોમાથી બિંઘો લવાયાં અને જરૂર પડતા બિંઘોની અંજનશલાકા પણ કરી. જરૂર-જંખુણી પણ નવાં બસાવ્યા.

સ્વપ્નનન્દેવ ૫૧ દીનના ડાંચા છે અને ૧૧ દીનની ફણવાળા છે. વળી ખાંખકામ કરતાં એક જ પાણાણમાં ડેરિલા, એ બાજુ ફણા સહિત પાર્શ્વનાથ, સામે આદિનાથ ને પાણળ ચંદ્ર પ્રલુની પ્રતિમાવાળા ચૌમુખજી મહારાજ નીકલ્યા હતા. તે શિખરમાં સં. ૧૯૭૧ના વૈ. શુ. ઉના મિરાજમાન કરવામાં આવ્યા છે.

* મુનિરાજશ્રી જંખુવિજયજી પ્રતિથિ સંબત નોંધનામાં ભૂલ્યા છે.

અંક : [૩-૪] ભદ્રાવતી તીર્થ (ભાડક) પ્રતિમા-લેખ-સંખ્ય [૬૫]

મુખ્ય મંહિર નણુ ગલારાતું છે. મંડપ પાંચ જોડીયાળાના અમવાળો છે. મુખ્ય ગલારા પર શિખર છે. એ બાજુના ગલારા પર ધુમટ છે. મંડપ પર વચ્ચાં ધુમટ છે. મંડપમાં જલ્લા-જલ્લિષ્ઠિના જોખા છે. મુખ્ય ગલારામાં તે પ્રતિમાળ છે. જમણી બાજુના ગલારામાં હું અને ડાણી બાજુના ગલારામાં તે એમ કુલ્લે ૧૬ પ્રતિમાળ છે. તેના લેખ આહિની અતુકૂળતા પડે તે માટે સ્વનેહિતો (શ્રી કેશરિયા પાર્શ્વનાથનો) એ નંબર ગણી જમણી આજુને ભીજે નંબર ગઈયો છે. પછી જમણી ગલારાના ક્રમે નવ નંબરો પાડ્યા છે અને પછી ડાણા ગલારાના તે નંબરો પાડ્યા છે. એમ નણુ ગલારામાં ભળી ૧૬ પ્રતિમાળ છે. ને મેડા ઉપર શિખરમાં ચૌમુખજી એમ ૧૬+૪=૨૩ પ્રતિમાળ છે.

પ્રતિમા સંખ્યા અને વર્ણા

ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે ૧૬+૪=૨૩ બિંબ છે. તેમ જ પંચધાતુના ૨૦ પંચતીર્થી, ૧ ઓનીરી, ૫ એકવડા ને ૨ સિદ્ધયક છે. વળા ચાંદીના ૪ સિદ્ધયક ને ૧ અષ્ટમગળની પાટી છે. પ્રાસાદ્દેવી પણ ગલારામાં છે. મંડપમાં ચાર બાજુને જોખાયોમાં પાર્શ્વયક્ષ, ભણિલદ, પદ્માવતી ને ચેકેશરી છે. પાર્શ્વયક્ષના જોખાયોમાં ભીજા એ જલ્લા ને જલ્લિષ્ઠિના ભૂર્તી છે. સામેના જોખાયોમાં ડોઈ એક ધાતુની પૂતળા છે.

સ્વનેહિતો પીળા રંગના હતા પણ લેપ સ્થામ રંગનો છે. મેડા ઉપર ચૌમુખજીને પીળા રંગનો લેપ છે. નંબર ૬, ૮ સ્થામ રંગનાં છે. નં. ૧૨ સ્ફૃથીકનાં છે. બાકીનાં અધ્યાં (૧૫) બિંબો સર્દેદ આરસતનાં છે.

નામો

આ ૨૩ બિંબોમાં આહિદેવ ૨ (નં. ૮, ૨૦), સુમતિનાથ ૧ (નં. ૩) પડ્મપલુ ૨ (નં. ૪, ૧૫), ચંદ્રપલુ ૩ (નં. ૨, ૧૭, ૨૨), શીતલનાથ ૨ (નં. ૧૬, ૧૮) વાસુપુણ્ય ૧ (નં. ૬) શાંતિનાથ ૨ (નં. ૧૧, ૧૨) ઇણુવાળા પાર્શ્વનાથ ૬ (નં. ૧ ૫, ૬, ૭, ૧૦, ૧૩, ૧૪, ૨૧, ૨૩) ને મહાવીર લગ્વાન ૧ (નં. ૧૬). એમ લગ્વાનનાં ૨૩ બિંબો છે.

બિંબાની ડાંચાઈ

નણુ ગલારામાં થઈ ૧૬ પ્રતિમાળ જણાવ્યાં છે. તેની ડાંચાઈ દ્યુચમાં ક્રમે આ પ્રમાણે છે. નંબર ૧:૫૧+૧૧ ઇણુ એમ કુલ =૩૨, ૨:૩૨, ૩:૩૦, ૪:૨૦, ૫:૨૫+૩૩૩=૧૮૩૩, ૬:૧૭+૧૫=૨૨, ૭:૧૫+૨૧, ૮:૧૫, ૯:૧૫, ૧૦:૬+૧૧=૧૦૧, ૧૧:૬૧, ૧૨:૪, ૧૩:૬૧+૨.૧૧=૧૨, ૧૪:૧૩૧+૩=૧૬૧, ૧૫:૧૩૧, ૧૬:૧૭૧, ૧૭:૨૪, ૧૮:૧૮ ને નંબર ૧૬:૧૭ ઈચ્છ ડાંચા છે. મેડા ઉપર એ ચૌમુખજી છે તે તો પાટીયોમાં ડાંચાઈનવાળા, ચાર બાજુ થાંલકાવાળા ને ઉપર શીખરવાળા છે, એટલે માપ નથી લર્દું.

ધીતવર્ણના હોવાથી 'કેશરિયા' અને સ્વનેથી પ્રગટ થેલે હોવાથી 'સ્વનેહિત' શ્રી કેશરિયા પાર્શ્વનાથ તો પ્રણાયો છે અને ચૌમુખજી મહારાજ પણ જમીનમાંથી નીકલ્યા છે એટલે લેખ નથી. (વળા ભીજાં એ પ્રતિમાળ પણ જમીનમાંથી નીકળેલા છે. તેમાં એક

६६]

श्री. क्लैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : १९

पूछ त शकाय तेवा छे तेनो। अमे उल्लेख नथी क्यों) भिजे नंभर ४ ने १० ने लेख धसाई गये। छे, ने नं. १२नो लेख लागतो नथी, तथी आजीना लेखा नाचे प्रभाषे छे,

पाठाथुनां भिंष्णानां द्वैष्णा।

नं. २ : सं. १९७६ वर्षे फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे तृतीयातिथौ सूर्यवासरे श्रीभद्रावत्यां श्रीचंद्रप्रभविंश श्रीतपागच्छाचार्य भट्टारक श्रीजयमुनिसूरिमः प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन च प्रस्थापितं।

नं. ३ : संवत् १६६७ वर्षे वैशाखवदि २ गुरु श्रीसुधर्मागच्छे भट्टारकजयकीर्तिसूरि(री)णां उपदेशात् श्रीबुरहानपुरवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीय सो० काकासुत सो० नापा सुभार्या हरवाई सुत हमजी भा० अमरादे सुत सो० विमलनानजी × × × स्वपरिवारयुतेन श्रीसुमतिनाथविंशं कारापितं श्रीअंचलाच्छेदी आचार्यश्रीकल्याणसागरसूरिप्रतिष्ठितं ॥^१

नं. ४ : लेख घसाई गयो छे.

नं. ५ : संवत् १५४८ वर्षे वैशाख शुद्ध × आचार्य भट्टारकजीश्री × × × सूरिणा प्रतिष्ठितं × × × × ×

नं. ६ : सं० १६०६ वर्षे माघकृष्ण ५ रवौ साहिं० वाहा वावा० उहसवाल ज्ञा० श्रै० दोहला उ० सालहण श्रै० वागदेवी नाम्ना स्तः श्रीपार्श्वनाथविं० का० प्रतिष्ठितं श्रीतपासूरिमः ।

नं. ७ : संवत् १५४८ वर्षे वैशाखशुद्धि ३ विजयज(य) चंद्रसूरिराज्ये प्रतिष्ठिता ।

नं. ८ : सं० १९७६ फा० शुद्धि ३ रविदिने प्रति० × ।

नं. ९ : संवत् १६६८ वर्षे वैशाखशुद्धि ४ वालो सारंगपुरवासि प्रापवंशे सं० दीपचंद ॥ भा० ज × पुत्र सं० हापा भा० गोरा० पितृग सं० भागा प्रसुखकुटुम्बयुतेन श्रीवासुपुज्यविंशं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज श्रीविजयसेनसूरिमः । प्रणत च पं. श्रीकनकविजय ।

नं. १० : लेख घसाई गयो छे.

नं. ११ : सं० १५४८ वर्षे वैशाख शुक्ल ३ विजयजय..... ।

नं. १२ : लेख नथी लागतो.

नं. १३ : सं. १५४८ वर्षे वैशाखशुद्धि ३ विजय..... ।

नं. १४ : संवत् १६९६ वर्षे माघवदि १ तिथौ चंद्रवासरे तपागच्छे भ० श्रीविजय-देवसूरिविजयो श्रीमालज्ञातौ शाह पल्ह भार्या रुपा पुत्र वच्छराज..... ।

^१ मुनिश्री ज्ञानविजयज्ञना आत्मनंदना लेखमा (पु. ४८, अ. ४, पु. ६५ भाँ) विजयसेनसूरि वर्गे ऐ उल्लेखो छे ते भरी रीते उपर जणाव्यु ते प्रभाषे छे—

२ प्रतिभा नंभर ३, १६ ने १८ उपर लेख पाठ्यकी आजुचे पाठ्यी उपर छे.

આંક : ૩-૪] લદ્ધાવતી તીર્થ (આંક) પ્રતિમા-દેખ-સંશોધણ [૬૭

नं. १५ : || सं० १७१० शा. १५७५ ×××× जेष्ठशुदि ७ ××××
भीमालपत्रन प्रतिष्ठितं विवं

नं. १६ : || सं० *इलाही १६५९ वैशाख वदि ६ गुरौ मोढ़जातौ वद्वशाखायां श्रीबर-
हानपूरवास्तव्य ठ० जशवंत ××××××××××××××××× तं
प्रतिष्ठितं श्रीमत्पागच्छे भट्टरक ××××××××× ।

नं. १७ : संवत् १६९६ वर्षे माघमासे कृष्णपक्षे प्रतिपक्ष्यवादां श्रीमंडपदुर्गे श्रीमन्नाग-
पूरीयथपागच्छे श्रीपासचंदसूरि गुरुभ्यो नमः । श्रीजयचंदसूरिविजये साह तोता भा० स्खोखी
सुतेन वनदेवार्थं × × लक्ष्मी × × × कारितं मा । पूजा । लक्ष्मीप । सं० सोमजी विचंद
प्रतिष्ठितं श्रीमालि जातौ ॥ तपागच्छे श्रीविजयदेवविजयसिंहसुरभिः प्रतिष्ठितं ॥

नं. १८ : × × इलाही ४८ सं० १६५९ वर्ष वैशाख × × × × × × × × ×
 मंडन श्रीब्रह्मान × × × × × × × × × × × श्रीशीतलनाथ × × × × × × ×
 × × × × भद्रारक श्रीविजय × × × × × × × × |

नं. १९ : सं० १५०८ शाके १३७३ प्रवर्तमाने मासोत्तममासे माघवमासे शुक्रपक्षे
३ तिथौ स्यैम्यवासरे × × × × × ।

* * *

पार्श्वयक्षः श्रीपार्श्वनाथजी अधिष्ठायक पार्श्वयक्षः ॥ सं. १९७६ वर्षे फाल्गुनमासे उज्ज्वल-पक्षे तृतीया रवौ तपागच्छाचार्यश्रीजयसुरिमि: प्रतिष्ठिता श्रीसंघेन प्रस्थापिता च भद्रावत्यां।

पश्चावती : सं. १९७६ वर्षे फाल्गुनमासे शुक्रपक्षे तृतीया रवै श्रीतपागच्छाचार्य श्रीजय-
सुरिमि: प्रतिष्ठिता श्रीसंघेन स्था० ।

माणिभद्र : सं. १९७६ वर्षे फालगुनमासे उज्ज्वलपक्षे तृतीयारविदिने श्रीमाणिभद्रमूर्ति तपागच्छाचार्यश्रीजयसुरिमि: प्रतिष्ठिता श्रीसंघेन भद्रावत्यां स्थापिता ॥

चक्रेश्वरी : सं. १९७६ वर्षे कालगुनमासे उज्वलपक्षे तृतीयारवौ तपागच्छाचार्यश्रीजय-
सूरिभिः प्रतिष्ठिता श्रीचक्रेश्वर्या मूर्तिः श्रीसंघेन भद्रावत्या प्रस्थापिता च ।

ਪੰਚਧਾਤੁ-ਪ੍ਰਤਿਮਾਨਾ ਕੇਓ।

पंचतीर्थी—१ : सं० १४६५ वर्षे कार्तिव० ५ गुरु उसवालज्जा० सा० उदसी भा० उत्तमदे सु० बणा भा० बी(बी)जलदे श्रेयसे श्रीपार्थनाथर्थिबं कारितं श्रीपङ्कोगच्छे श्रीशांति-
सुरिपदे श्रीसुरिभिः ॥

● પ્રતિમા પરના ઈકાણી સંવતના ઉલ્લેખો મારા જ્યાદમાં નથી, પણ ઉલ્લેખો તો ધણાખુશો જ.

६८

श्री. नैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : २२

पं० २ : || सं० १५०८ राणपुरे प्राग्वाट सं० हीरा भा० × × दे × × × × × केन भा० देवलदे पुत्र देवराजादि कुटुंबयुतेन श्रीसुपार्श्वनाथविंबं का० प्र० तपाश्रीसोमसुंदर-सूरिशिष्यश्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥ श्रीः ॥

पं० ३ : सं० १५१० वर्षे च्येष्ठशुदि × दिने उकेशवंशे सा० पा(ण)ता सा० राजा सा० काजा पुत्र सा० शुभकरेण श्रा० सरजुपृष्ठार्थी आदिनाथविंबं का० खरतरगच्छे श्रीजिन-वृह्नसूरिश्रीजिनचंद्रसूरिपटे श्रीजिनसागरसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

पं० ४ : संवत् १५१३ वर्षे वैशाखशुदि ३ गुरौ श्रीउपकेशज्ञातौ कर्णाटगोत्रे सा० हरपाल भा० गुजरि पु० सा० साहणकेन भा० सुहवदे पु० श्रीपति भा० सोढी पु० धन-राजयुतेन स्वश्रेयसे श्रीअभिनंदननाथविंबं कारितं श्रीउपकेशगच्छे श्रीकुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं भ० श्रीकक्षसूरिभिः ।

पं० ५ : सं० १५१५ वर्षे वैशाखशुदि १३ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० दो० इला भा० कुंमादे सुत बेला गेला नविन दो० देपालेन भा० झाँकुं पुत्र × × × × श्रीविमलनाथविंबं का० प्र० पिधलगच्छे भ० श्रीविजयदेवसूरिपदेशेन श्रीशालिभद्रसूरिभिः । लीबडीग्रामे ।

पं० ६ : संवत् १५१५ वर्षे आषाढ शुदे ३ प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० खोखा भाया॒ सोनी॒ सुत धम्माकेन भाया॒ मटकु आतृ॒ सुठा॒ सुत पापट ठाकुर भाया॒ भरगादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीविमलनाथविंबं का० प्र० श्रीरत्नशेखरसूरिभिः । नारंगपुर ॥

पं० ७ : सं० १५१८ वर्षे आषाढ कृष्ण प्रा० श्रे० भाटा भा० भरमादे पुत्र श्रे० जेला भा० भगरादि नाम्ना कुटुंबयुतया स्वश्रेयोर्थी श्रीश्रीवासुपृज्यविंबं का० प्र० तपगच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

पं० ८ : सं० १५२२ वर्षे जेष्ठ शुदि १० बुध श्रीश्रीमाल जा० ठ० पाता भा० साधी॒ सु० सा० टीडा भा० कमाइ॒ सुत रीडाकेन भा० वीरीयुतेन भा० रमादे॒ श्रेयसे श्रीशीतलनाथ-विंबं श्रीपु० श्रीसदगुरुणामुपदेशेन का० प्र० विधिना ॥ श्री श्रीस्तंभतीर्थनगरे ॥

पं० ९ : सं० १५२२ वर्षे वैशाख शुदि १० उप० ज्ञा० जहाणोवा गोत्रे सं० जसदा भा० नांह॒ सुप(त)॒ स० घूघल॒ नीना॒ साक॒ गोक॒ स० घूघण॒ भा० मनी॒ पु० स० धसखण॒ भाता॒ स० आत्मश्रेयसे श्रीमनिसुवतर्विंबं का० प्र० श्रीसंदेशगच्छे श्रीयशोभद्रसूरिसंताने श्रीशालिसूरि

पं० १० : सं० १५२८ फा० शु० ५ धारवासि प्राग्वाट सा० सारंग भा० नानी॒ सुत सा० रामाकेन भा० पदमाइ॒ प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसुमितिनाथविंबं का० प्रति० तपाश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

अंक : ३-४] लक्ष्मी तीर्थ (भाँड़) प्रतिभा-वैभ-संथ । [६६

पं० ११ : || सं० १५३० वर्षे माघ व० २ शुक्रे लाडल वास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञा० दो० शिवा भा० सिंगारदे पु० धणसी भार्या लखीसहितेन सिंगारदे आत्मपुण्यार्थं श्रीशीतल-नाथर्विंचं का० प्र० पूर्णिमापक्षे श्रीधर्मशेखरसूरिपटे श्रीविशालराजसूरीणामुपदेशेन विधिना ॥ छ ।

पं० १२ : सं० १५३० वर्षे माघ शुदि १३ रवौ श्रीशीतंशे लघुशंताने मं० मूँजा भार्या महिगलदे सुत मं० साइवा भा० हीरू पुत्र मं० गोपा सुश्रावकेण भार्या गुरदे सहितेन श्रीअंचलगच्छे श्रीजयकेसरसूरीणामुपदेशेन वृद्धभातृ गोविद भार्या लीला पुण्यार्थं श्रीधर्मनाथ-विंचं कारितं प्रतिष्ठि श्रीसंघेण चिरं नंदतु

पं० १३ : १५३४ माघशुदि १० बुधे श्रीशीतंशे दो० आसा भार्या माङ्कु सुत दो० भावल भा० रामति सुत दो० गणपति सुश्रावकेण भार्या कपुरी पुत्र मागोर देवसी द्वितीय भा० कउतिगदे पुत्र शिवा पितृका दो० अजा भा० गोमति पुत्र महिराज सहितेन श्रीअंचलगच्छेश श्रीजयकेशरसूरीणामुपदेशेन स्वश्रेयसे श्रीसुविधिनाथर्विंचं कारितं प्रतिष्ठितं चिरं नंदतु ॥ श्री ॥

पं० १४ : संवत् १५४९ वर्षे फागुणशुदि २ सोमदिने श्रीमंडपदुर्ग वास्तव्य श्रावके बद्धभान सा श्रीपाल श्रावकेन श्रीकुन्त्युनाथर्विंचं कर्मक्षयनिमित्तं कारितं शुभं भवतु श्री ॥

पं० १५ : संवत् १५६५ वर्षे माघशुदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय सा० नाथा भा० चंगी नाम्न्या सा० जागा भा० अधिकु सुत ठाकर प्रमुख समस्त कुदुंबयुतया स्वश्रेयोर्थं श्रीचंद्रप्रभर्विंचं कारापितं प्रतिष्ठितं च श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीसुमतिरत्नसूरिभिर्विधिना ।

पं० १६ : संवत् सोल२६ (१६२६) वर्षे फाल्गुणशुदि ८ दिने तपागच्छे भद्रारक श्रीहीरविजयसूरि स्वहस्तप्रतिष्ठितं श्रीशांतिनाथर्विंचं गां० लखमसी भा० वरवाई सुत नकरा पदमसी बडलीप्रामे ।

पं० १७ : ए४ ॥ संव० १६२७ वर्षे शाके १४९१ प्रवर्तमाने पोसमासे शुक्ळपक्षे पूर्णिमा तिथौ गुरुवासरे श्रीश्रीमालज्ञातीय वृद्धशाखायां सं० राणा भार्या बा० राजलदे सुत सा० चांपा अमीपाल श्रीनमिनाथर्विंचं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीविजयदानसूरि तप्पे श्री श्री ५ हीरविजयसूरिभिः । श्रीस्तंभतीर्थनगरे शुभं भूयात् ॥

पं० १८ : || संवत् १६४३ फाँड० ११ वृ श्रीश्रीमालज्ञाती साहमेधा भाया(यी) बा वीरा नाम्नी स्वपति पुन्यार्थं श्रीसुमतिनाथर्विंचं कारापित × सुविहितशिरोमणि श्रीहीरविजयसूरिराज्ये श्रीविजयसेनसूरिभिः पत्तन (प्रतिष्ठितं) ॥ श्री ॥

पं० १९ : संवत् १६५९ वर्षे आषाढाव ५ दिने गुरौ × उच्चरशाढायां उसवालज्ञातीय

५०]

श्री. नैन संत्य प्रकाश

[वर्ष : २२

लोदागोवे सं × जयवंत भार्या जयवंतदे सुहागदे पुत्र सं० राजसिंह सं० अमीपाल वीरपाल-
युतेन श्रीपद्मप्रभविं कारितं स्वपुण्यार्थं प्रतिष्ठितं श्रीजिनचंद्रसूरिभिः श्रीखरतरगच्छे ।

एकवडा : संवत् १६६० व० वै० शु० १३ दि० श्रीश्रीमालज्ञा० सं० वडा तदभा०
श्रा० रत्नाबाई श्रीकुंथुनाथविं० का० प्रति० तपा० भ० श्रीविजयसेनसू० ××× नयविजय……

पं० २० : एर्द०॥ सं० १७०३ वर्षे चैत्र व० ७ शुक्रे श्रीबहरानपुरवास्तव्य पोरवाड-
ज्ञातीयवृद्धससने (वृद्धसाखायां) सं० फोकट भार्या वीराबाई पुत्र सं० धर्मदासेन स्व० भा०
पुत्र सं० सहसकरण श्रेयसे श्रीविमलनाथविं कारितं प्रतिष्ठापितं स्वकारितप्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं
च ॥ तपागच्छाधिराज श्रीविजयसेनसूरिपट्टवासवकुम्भश्रूगार श्रीविजयदेवसूरीदैः ॥

एकवडा : संवत् १७०५ व० वै० व० २ दि० वृद्धोकेशज्ञा० सा० काहजी सुत
वीरचंदनाम्ना श्रीविमलनाथविं० कारि० तपा० श्रीविजयदेवसूरिभिः ।

एकवडा : सं० १८१६ श० १६९२ ××× ११ रस नग ××× सिद्धसेन
गुरोपदेशात्

एकवडा : सं० १८२६ श० १६९२ (बाकी उपर प्रमाणे)

एकवडा : सं० १९१० (१७१०) व० ज्ये० शु० ६ दि० प्राघ्वाटज्ञा० ×××
णरवा ××× मनजीकेन सुपासविं कारितं प्रतिष्ठितं च विजयराजसूरिभिः ।

सिंहद्वार

वणी स्टेशनथी आवता॒ गाम पहेलु॑ आवे॑ छे॑ अने॑ पठी॑ तीर्थ॑ आवे॑ छे॑. गाम ने॑
तीर्थ॑ नजही॑क ज॑ छे॑. गामथी॑ भंहिर॑ पूर्वमाँ॑ छे॑ ने॑ भंहिस्थी॑ गाम पश्चिममाँ॑ छे॑. अर्थात्॑
भंहिर॑ पश्चिम सन्सुख॑ छे॑. तीर्थनी॑ जग्या॑ धषा॑ विशाण॑ प्रभाष्युमाँ॑ छे॑. पहेलु॑ फट्टक॑ आवे॑
पठी॑ सिंहद्वार॑ आवे॑ छे॑. ते॑ द्वारमाँ॑ पैसतां॑ सामे॑ प्रलुनु॑ भंहिर॑ किल्लामा॑ हेखाय॑ छे॑ अने॑
द्वारनी॑ डाखी॑ जमेयु॑ आजुओ॑ ऐ॑ भंहिर॑ हेखाय॑ छे॑. तेमाँ॑ डाखी॑ आजुओ॑ नागपुरवाणा॑ झवेरी॑
हीरालालछु॑ केशरीभलज्जु॑ अंधावेलु॑ थी॑. आदीश्वर॑ अगवानतु॑ भंहिर॑ आवे॑ छे॑. अने॑ जमेयु॑
आजुओ॑ शेष॑ नेमीचंह्य॑ पारेख्य॑ अंधावेलु॑ हाहाज्जना॑ नामथी॑ ओणभातु॑ भंहिर॑ छे॑. अन्ने॑
भंहिर॑ शिखरथाधी॑ छे॑. नागपुरवाणा॑ भंहिरमाँ॑ नेष॑ गजारा॑ छे॑. वयदा॑ गजाराने॑ इरती॑
प्रदक्षिण्यु॑ छे॑. भध्य॑ गजारे॑ नेष॑ पाखाणु॑-भिंगो॑ छे॑. नेष॑ पञ्चतीर्था॑ छे॑. सिंहचट्टु॑ पञ्च॑ छे॑.
जमेयु॑ आजुना॑ गजारामाँ॑ पुंडीकस्वाभीनी॑ भूर्ति॑ छे॑ ने॑ डाखी॑ आजुओ॑ जिनकुशवस्तुरिनी॑
भूर्ति॑ छे॑. भंहिस्थी॑ अहार॑ सामे॑ आरसनी॑ छनीभाँ॑ आ॑ भंहिर॑ अंधावनारतु॑ आरसतु॑ आ॑भा॑
कहनु॑ आवलु॑ पाखण्यथी॑ भेसाडवामाँ॑ आ॑य्यु॑ छे॑. तेमी॑ पठेये॑ हेरीमाँ॑ क्षेत्रपालनी॑ स्थापना॑ छे॑.
जमेयु॑ आजुना॑ भंहिरमाँ॑ जिनकुशवस्तुरिनी॑ भूर्ति॑ वगेरे॑ छे॑.

અંક : ૩-૪] ભદ્રાવતી તીર્થ (ભાંક) પ્રતિમા—બૈષ-સંઘડ

[૭૧

નાગપુરવાળાના મંહિરના લેખો।

પાણવિંબ નં. ૧ : સં૦ ૧૫૯૮ વં જ્યો શું ૩ × × × × × × × × ×
શ્રીઆદિનાથ × × × × ×

ન. ૨-૩ : લેખો ઘસાઇ ગયા છે.

શ્રીપુંડરીકપ્રથમગણધર સં૦ ૧૮૮૮ વૈ૦ સું ૩ × × × × × × × × × ચરિત્ર-
સૂરિ × × ×

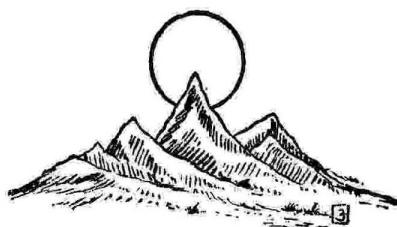
દાદાશ્રીજિનકુશલાંગુલીશ્વરજીમહારાજ સં૦ ૧૯। ૮૮। મિ। વૈ। સુ। ૩

પંચતીર્થીઃ : સંવત् ૧૬૯૩ વર્ષે ફાગુણ શુદ્ધિ ૩ દિને પ્રાવાટજ્ઞાતીય સાહ યનુભાર્યા
કાન્હાદે પુત્ર દેવકરેણ શ્રીકુન્થુનાથવિંબ કારાપિત પ્રતિષ્ઠિત શ્રીતપાગચ્છે મ૦ શ્રીવિજયદેવસૂરિ
આચાર્ય શ્રી વિજયસિદ્ધ(સિંહ)સુરમિઃ ।

દુપસંહાર

લેખોના અંગે તો સંવતો, ગામો, જોનો, ગંઢોના નામો, પ્રતિષ્ઠા કરનારના ગંઢો,
નામો વગેરેની અંતિહાસિક ચર્ચા હોય, પણ વિસ્તારના ભયથી તે અને ફરવામાં નથી આપી.
લેખો ને સ્થિતિમાં મલ્યા છે તે સ્થિતિમાં આપ્યા છે.

આ ભદ્રાવતી તીર્થ નહું નથી, તે તો લાંના સ્થાપય પરથી જણાય છે. પણ આ તો
દિલ્લી થયો છે. ગભારમાં ને ભંડપમાં કાયનું કામ તેમજ રંગીન ચિત્રકામ કરીને આ મંહિર
શશુગણું છે. ઘરેખર આ યાત્રાનું ધામ છે, અન્યોએ યાત્રા કરી ભવના ભયથી અભય
મેળવવું જોઈ એ.



विनयचंद्रकृत सुश्रावक छीतराष्ट्रकम्

सं. श्री. भंवरलालजी नाहटा

राजस्थान पुरातत्व मन्दिर स्थित श्रीहीरकलशगणिके संग्रह गुटकेमें कवि विनयचन्द्र कृत सुश्रावक छीतराष्ट्रककी उपलब्धि हुई। इस प्रकारकी ऐतिहासिक कृतियाँ जैन साहित्यमें अपना विशिष्ट महत्व रखती हैं। इस अष्टकके नायक डेहनिवासी छाबड़ छीतर (मल) थे। अष्टकमें यह उल्लेख है कि इहें खरतरगच्छीय वा. हर्षप्रभके शिष्य हीरकलशने श्रावक बनाया था। इससे विदित होता है कि ये जन्मसे ओसवाल श्रावक नहीं थे। दिग्म्बर सरावगी लोगोंमें छाबड़ गोत्र है, संभवतः छाबड़ और छाबड़ एक हो। ये छीतर श्रावक सुप्रसिद्ध और समृद्धिशाली थे। इन्होंने बीकानेर आकर श्रीजिनचंद्रसूरिजीको बन्दन किया तथा वहाँके समस्त मन्दिरोंके दर्शन किये एवं जिनालयोंमें भक्तिपूर्वक पूजाएं करवाईं। ये देवाधिदेव महावीरके चरणभक्त और श्रावकोंमें अग्रगण्य थे। इन्होंने हीरकलशगणिके वचनोंसे (आराधना) करके स्वर्गगतिको प्राप्त किया। ये स्वर्गमें रहते हुए भी अपने पाल्हा हेमा आदि परिवारवालोंको कल्याणकारी हों। इन्होंने अद्भुत धर्मशालाका निर्माण करवाया।

इस गुटकेका अधिकांश भाग सं. १६२०—२५ के आसपास लिखित है। श्रीजिनचंद्रसूरिजी सं. १६१२ में आचार्यपद पाकर सं. १६१३ में बीकानेर पधारे थे अतः इन्हीं वर्षोंमें छीतर श्रावक हुए विदित होते हैं।

सं. १६२५ में हीरकलश गणिने अपने शिष्य हेमराज (हेमाण्द) सहित डेहमें चातुर्मास किया था और आषाढ़ शुक्रा ११ के दिन वा. साधुरंग कृत कर्मविचारसार प्रकरणकी प्रतिलिपि इस गुटकेमेंकी थी यह कृति १७२ गाथा (क्लेक २१५)की प्राकृत भाषामें है। और इसकी रचना ओसवाल सुश्रावक पाल्हाकी अभ्यर्थनासे की गई थी। इससे विदित होता है कि हीरकलश गणि कई बार डेह पधारे होंगे और श्रावकोंको धर्ममें स्थिर किया होगा। सं. १६२५ आषाढ़ सुदि ९ के दिन रचित श्रीनेमिनाथ इगवीस ठाण बत्तीसीकी अंतिम गाथा इस प्रकार है:—

“देसइ सवालख मांहि नयरी डेहि प्रगट सुवास ।
संवत सोलह सइ पंचवीसइ सुदि आषाढ़ मास ॥
शनिवार नवमीय हीरकलशइ आणि अति उल्हास ।
इगवीस बोलहि कीयउ मोळ हि नेमिजिन गुणरास ॥ ३२ ॥”

अब यहां कवि विनयचंद्र कृत छीतराष्टक प्रकाशित किया है। इसके रचयिता विनय-
चंद्र कौन थे यह अनेकणीय है।

॥ विनयचन्द्रकृत सुश्रावकछीतराष्टकम् ॥

श्रीमतश्रीजिनचंद्रसूरिसुगुरो राज्ये विशाले स्फुटम्

रम्ये डेहपुरे च छाबड़कुले श्रीछीतरो श्रावकः ।

जातो धर्ममतिस्सदावतधरः सदेवपूजापरः

साधूनां विहितादरः खरतरस्सौन्दर्यविद्याधरः ॥ १ ॥

हर्षप्रभवित्येण हीरकलशेन सादरात् ।

कृतोऽन्यं श्रावको भव्यः विद्यातो पृथ्वीतले ॥ २ ॥

अदृष्टपूर्वं गुणसंस्तवं कृतं मनोहरं सर्वजनस्य सौख्यदम् ।

जनाभिमान्यं कमलाधरं परं स्तवीम्यहं छीतरश्रावकं परम् ॥ ३ ॥

श्रीपूज्याः वन्दितारतेन पुरे विक्रमनामनि ।

महैत्यावली रम्या दृष्टा शीघ्रं च हर्षतः ॥ ४ ॥

अकाषांत् छीतरस्तत्र पूजां सौख्यं विधायिनी ।

अत्यन्तश्रावका नित्यं मानयन्ति शुभाशयाः ॥ ५ ॥

श्रीवीरचरणांभोजसद्वक्तश्रावकाग्रणी ।

छीतराख्यो गुणी द्वयातः सच्चातुर्यं कलान्वितः ॥ ६ ॥

श्रीहीरकलशवचनं पीत्वा जातो महद्भुतस्सौपि ।

संप्राप्तं त्रिदशालयभुवनं सुरनारिसंयुक्तम् ॥ ७ ॥

पाल्हाहेमाल्ययोरेव भूयात्स श्रेयसे मुदा ।

विस्तारयतु कल्याणं स्वर्गस्थः स्वपरिवृतौ ॥ ८ ॥

छाजीपतिरसौ जीयात् पुत्रपौत्रेण संयुतः ।

धर्मशालामहद्भूताः येनाकारि निजौकृसि ॥ ९ ॥

॥ इति सुश्रावक छीतराष्टकं कृतं विनयचन्द्रेण ॥

पूज्य भुनिराज्ञेन विनंति

पूज्य आचार्यादि भुनिवशेन, तेऽनेनो विष्णुर चालु थथो छावाथी पेतानां
भद्रवायेवां सरनामां, ता. १० भी सुधीभां कार्यालयभां लभी भोक्तवा विनंति छे.

०४८.

Shri Jaina Satya Prakasha, Regd. No. B. 3801 श्री जैन सत्य प्रकाश

श्री जैन सत्य प्रकाश

अंगे सूचना

थेगना

१. श्री. नैनधर्म सत्य प्रकाशक समिति द्वारा 'श्री. जैन सत्य प्रकाश' मासिक १६ वर्ष थाय়ে প্রগত করণামাং আবে ছে.

२. एस समितिना आगुवन संस्कृक तरडि इ. ५००१ आ० दाता तरडि इ. २००१ आ० सत्य तरडि इ. १०११ राखवामां आवेला छे. आ रीते भद्द आपनारने कायमने भाटे मासिक भोक्तवामां आवे छे.

विनांति

१. पूज्य आचार्याहि मुनिवरो चतुर्भासितु स्थग नक्षी थां अने शेष काणमां ल्यां विहरता होय एस स्थगतु, सरनामुं मासिक प्रगत थाय एना १५ हिवस अगाउ भोक्तवता रहे अने ते ते स्थगे आ मासिकना प्रयार भाटे आहो अनाववानो उपदेश आपना रहे एवी विनांति छे.

२. ते ते स्थगेमांथी भणी आवतां प्राचीन अवशेषो डे ऐतिहासिक मालितीनी सूचना आपवा, विनांति छे.

३. नैनधर्म उपर आक्षेपात्मक लेखा, आहिनी सामग्री अने मालिती आपता रहे एवी विनांति छे.

आहुकोने सूचना

१. "श्री जैन सत्य प्रकाश" मासिक प्रत्येक अंगेलु महिनानी १५भी तारीखे प्रगत थाय छे.

मुद्रक : गोविंदवाल जगरीभाई शाह, श्री शारदा मुद्रणालय, पानडार नाडा, अमदाबाद.

प्रकाशक : यीमनलाल गोडाहास शाह.

श्री. नैनधर्म सत्य प्रकाशक समिति कार्यालय, नेशंगभाईनी वाडी, धीकांदा रोड-अमदाबाद.

२. आ मासिकतुं वार्षिक लवाजम इ. ३ वर्ष इपिया राखवामां आव्युं छे.

३. मासिक वी. पी. थी न मंगावतां लवाजमना इ. डु मनीओर्ड्डारा भोक्तवा आपवाथा अनुद्गता रहेशे.

४. आ मासिकतुं नवुं वर्ष हिवाणीथा शह थाय छे. परंतु आहुके गमे ते अंकुथी अनी शकाय.

५. आहुकोने अंक भोक्तवानी पूरी साव-चेती राखवा छतां अंक न भगे तो स्थानिक पोर्ट ऑफिसमां तपास कर्या पक्षी अभने सूचना आपती.

६. सरनामुं अद्वाववानी सूचना ओळामां ओळा १० हिवस अगाउ आपवी जडरी छे.

लेखकोने सूचना

१. लेखा कागणी एक तरह वाची शकाय तेवी शीते शाहीथी वर्षी भोक्तवा.

२. लेखा दूङ्का, मुद्रासर अने व्यक्तिगत वीकात्मक न होवा नेह अे.

३. लेखा प्रगत करवा न करवा अने तेमां पत्रनी नीतिने अनुसरीने सुधारौवधारो करवानो हुक तंत्री आवीन छे.